بسم اللہ الرحمٰن الرحیم   نحمدہٗ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم   وعلیٰ عبدہ المسیح الموعود

मसीह मौऊद[अ.] नम्बर

ولقد نصرکم اللہ ببدر وانتم اذلۃ

अंक 10-11
मूल्य 575 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly
BADAR Qadian
HINDI

वर्ष 7
संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद
उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

Postal Reg. No. GDP/001/2019-22 | मार्च 2022 ई. 17-10 | 17-10 अमान 1401 हिज्री शम्सी | 13-6 शाबान 1443 हिज्री क़मरी

“मैं तेरे प्रचार- प्रसार को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाउंगा”
इल्हाम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

(तज़्करः, पृष्ठ 260 प्रकाशन दिसम्बर 2006 ई. क़ादियान)

"हमारे विरोधी कहते हैं कि हम जमाअत का नाम संसार से मिटा देंगे। कौन है जो अल्लाह तआला से प्रेम करने वालों और वफादारी करने वालों को मिटा सके ... विरोधी चाहे जितना भी ज़ोर लगा लें लेकिन यह जमाअत ख़ुदा तआला ने अपने दीन को संसार में फैलाने के लिए स्थापित की है। इसलिए प्रत्येक अवसर पर ख़ुदा तआला ही संभालता है और सहायता करता है और एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी के हृदय में इसका प्रेम और उसके उद्देश्य की पूर्ति की तड़प पैदा करता चला जाता है।"

(उपदेश सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, ख़ुत्बा जुमा दिनांक 08 जनवरी 2021 ई.)

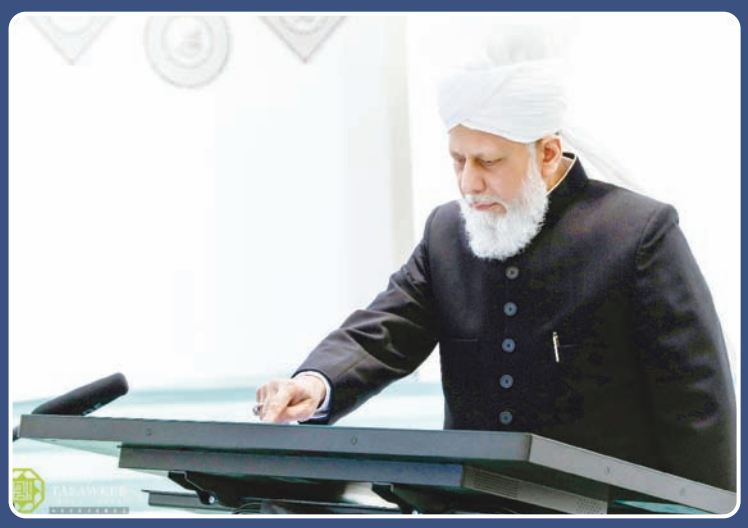

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 15 जनवरी 2021 ई. को M.T.A घाना के नए चेनल का उद्घाटन करते हुए

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 02 अप्रैल 2021 ई. को चीनी भाषा में जमाअत की नई वेबसाइट लांच करते हुए

दिनांक 09 अप्रैल 2021 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ क़ुरआन वेबसाइट का उद्घाटन करते हुए

दिनांक 27 जून 2021 ई. को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ M.T.A इन्टरनेशनल की ऑनलाइन कान्फ्रेंस को सम्बोधित करते हुए

दिनांक 02 जुलाई 2021 ई. को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ Ahmadipedia वेबसाइट का उद्घाटन करते हुए

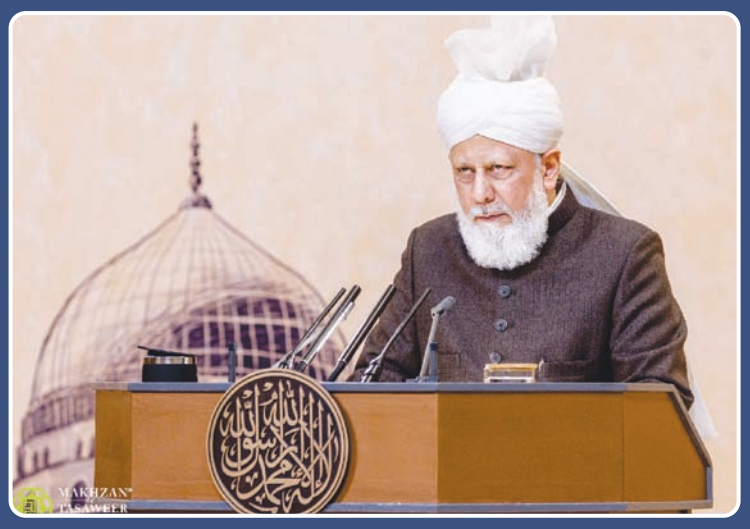

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जलसा सालाना क़ादियान के अवसर पर समापनीय भाषण और दुआ करवाते हुए

जलसा सालाना क़ादियान, भारत 24, 25, 26 दिसम्बर 2021 ई. को आयोजित के कुछ दृश्य

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

साप्ताहिक हिन्दी बदर मसीह मौऊद[अ.] नम्बर

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इनामी चैलेंज

हर मुख़ालिफ़ को मुक़ाबले के लिए बुलाया हमने

اِنَّ السُّمُوْمَ لَشَرُّ مَا فِی الْعَالَمِ شَرَّ السُّمُوْمِ عَدَاوَۃُ الصُّلَحَاء

पीर महर अली शाह गोलड़वी के लिए एक और वैभवशाली इनामी चैलेंज

मुक़ाबले में तफ़सीर लिखने के बाद अगर तुम्हारी तफ़सीर शब्दों और अर्थ की दृष्टि से सर्वोत्तम प्रमाणित हुई तो उस वक़्त यदि तुम मेरी तफ़सीर की ग़लतियाँ निकालो तो प्रत्येक ग़लती पर पाँच रुपया इनाम दूंगा

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह वैभवशाली इनामी चैलेंज हम आप अलैहिस्सलाम की किताब "नुज़ूलुल मसीह" रूहानी ख़ज़ायन भाग 18 से पेश कर रहे हैं। जैसा कि पहले हम निवेदन कर चुके हैं सत्तर दिन की अवधि के अंदर सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एजाज़ुल मसीह के नाम से साहित्य की दृष्टी से सर्वोतम अरबी में सूरः फ़ातिहा की तफ़सीर प्रकाशित कर दी लेकिन पीर महर अली शाह गोलड़वी ने कोई तफ़सीर प्रकाशित नहीं की। जबकि डेढ़ साल बाद उन्होंने एक किताब "सैफ़-ए-चिश्तियाई" के नाम से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजी जो उर्दू में थी और इस में तफ़सीर का कोई नाम-ओ-निशान भी नहीं था केवल बेहूदा आरोप थे। इस सम्बन्ध में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उत्तर पहले दिए जा चुके हैं। आप अलैहिस्सलाम के अन्य कुछ उत्तर और वैभवशाली इर्शादात और आप अलैहिस्सलाम के इनामी चैलेंज इस शुमारा में हम प्रस्तुत करेंगे।

तफ़सीर में ग़लती निकालने पर प्रत्येक ग़लती के पाँच रुपया का इनामी चैलेंज

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : हमने कई बार यह भी विज्ञापन दिया कि तुम हमारे मुक़ाबले पर कोई अरबी पुस्तक लिखो फिर अरबी भाषा जानने वाले उसके जज ठहराए जाएंगे। फिर यदि तुम्हारी पुस्तक सरस-सुबोध साबित हुई तो मेरा समस्त दावा झूठा हो जाएगा और मैं अब भी इक़रार करता हूँ कि सामने तफ़्सीर लिखने के बाद यदि तुम्हारी तफ़्सीर शब्दों और अर्थों की दृष्टि से उच्चतम सिद्ध हुई तो उस समय तक यदि तुम मेरी तफ़्सीर की ग़लतियां निकालो तो प्रति ग़लती पांच रुपये इनाम दूंगा इसलिए व्यर्थ मीन-मेख से पहले यह आवश्यक है अरबी तफ़्सीर के द्वारा अपनी अरबी जानना सिद्ध करो। क्योंकि जिस कला में कोई व्यक्ति ज्ञान नहीं रखता उस कला में उसकी मीन-मेख स्वीकार करने योग्य नहीं होती। भवन निर्माता, भवन निर्माता की मीन-मेख (या आलोचना) कर सकता है और लोहार, लोहार की परन्तु एक झाड़ू लगाने वाले को अधिकार नहीं पहुंचता कि एक दक्ष भवन निर्माता की आलोचना करे।

(नुज़ूलुल मसीह रूहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 440)

जो एक पंक्ति भी अरबी नहीं लिख सकता क्या वह अरबी की ग़लतियाँ निकालने का अधिकार रखता है?

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : आपकी व्यक्तिगत योग्यता तो यह है कि अरबी की एक पंक्ति भी नहीं लिख सकते। फिर सैफ़ेचिश्तियाई में भी आपने चोरी के माल को अपना माल ठहराया। तो फिर इस योग्यता के साथ आपको क्यों शर्म नहीं आती। हे भले आदमी पहले अपनी अरबी दानी सिद्ध कर फिर मेरी पुस्तक की ग़लतियां निकाल और प्रति ग़लती पर हम से पांच रुपये ले और मुक़ाबले पर अरबी पुस्तक लिखकर मेरे उस कलाम के चमत्कार का झूठा होना दिखला। अफ़सोस कि दस वर्ष का समय गुज़र गया किसी ने सभ्यतापूर्ण तरीक़े से मेरा मुक़ाबला नहीं किया। अन्ततः यदि किया तो यह किया कि तुम्हारे अमुक शब्द में अमुक ग़लती है और अमुक वाक्य अमुक पुस्तक का चुराया हुआ मालूम होता है। परन्तु साफ प्रकट है कि जब तक स्वयं मनुष्य का ज्ञानी होना सिद्ध न हो उसकी आलोचना क्योंकर सही मान ली जाए। क्या संभव नहीं कि वह स्वयं ग़लती करता हो और जो व्यक्ति मुक़ाबले पर लिखने पर सामर्थयवान नहीं वह क्यों कहता है कि पुस्तक में कुछ वाक्य बतौर चोरी है। यदि चोरी से यह बात संभव है तो क्यों वह मुक़ाबले पर नहीं आता और लोमड़ी की तरह भागा फिरता है। हे मूर्ख! पहले किसी तफ़्सीर को सरस-सुबोध अरबी में लिखने से अपना अरबी जानना सिद्ध कर फिर तेरी आलेचना भी ध्याननीय हो जाएगी। अन्यथा बिना सबूत अरबी जानने के मेरी आलोचना करना और कभी चोरी का आरोप लगाना और कभी व्याकरण की ग़लती का यह केवल गू खाना है। हे जाहिल बेहया पहले सरस-सुबोध अरबी में किसी सूरह की तफ़्सीर प्रकाशित कर फिर तुझे प्रत्येक के नज़दीक हक़ प्राप्त होगा कि मेरी पुस्तक की ग़लतियां निकाले या चोरी का ठहराए। जो व्यक्ति सरस-सुबोध अरबी में हज़ारों भाग लिख चुका है न केवल व्यर्थ तौर पर अपितु वास्तविक अध्यात्म ज्ञानो के वर्णन करने में तो क्या केवल इन्कार से उसका उत्तर हो सकता है या जब तक काम के मुकाबले पर काम न दिखाया जाए केवल जीभ की बक-बक प्रमाण हो सकता है और इस बात से कौन सी योग्यता सिद्ध हो सकती है कि केवल मुंह से कह दें कि यह पुस्तक ग़लत है या अमुक पुस्तक से कुछ वाक्य चुराए गए हैं। भला इससे अपनी ख़ूबी क्या सिद्ध हुई और यदि

शेष पृष्ठ 17 पर

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इनामी चैलेंज	1
2	क़ुरआन का आदेश	2
3	रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश	2
4	हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
5	ख़ुदा तआला का अस्तित्व क़बूलियत दुआ के आलोक में	4
6	जीवनी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुरआन-ए-मजीद से आप का प्रेम और ख़िदमत-ए-क़ुरआन	8
7	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई जमाअत अहमदिया की प्रगति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों के आलोक में	12

क़ुरआन का आदेश

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ الۡمَلِکِ الۡقُدُّوۡسِ الۡعَزِیۡزِ الۡحَکِیۡمِ ○ هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡهِمۡ اٰیٰتِهٖ وَیُزَکِّیۡهِمۡ وَیُعَلِّمُهُمُ الۡکِتٰبَ وَالۡحِکۡمَةَ ٭ وَاِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ○ وَّاٰخَرِیۡنَ مِنۡهُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ ؕ وَهُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ○ ذٰلِکَ فَضۡلُ اللّٰهِ یُؤۡتِیۡهِ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِیۡمِ ○

(सूरः जुम्मा: 2 से 5)

अनुवाद : अल्लाह ही की तस्बीह करता है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। वह बादशाह है, क़ुद्दूस है, कामिल ग़लबा वाला और साहब-ए-हिक्मत है। वही है जिस ने उम्मी लोगों में उन्ही में से एक महान रसूल अवतरित किया। वह उन पर उसकी आयात की तिलावत करता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब की और हिक्मत की तालीम देता है जबकि इससे पहले वे निसंदेह खुली खुली गुमराही में थे। और इन्ही में से दूसरों की तरफ़ भी (उसे मबऊस किया है) जो अभी उन से नहीं मिले। वह पूर्ण ग़लबा वाला (और) साहब-ए-हिक्मत है। यह अल्लाह का फ़ज़ल है वह इस को जिसे चाहता है अता करता है। और अल्लाह बहुत बड़े फ़ज़ल वाला है।

सूरः जुमा की इन आयात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दो बेअसतों का वर्णन किया गया है। आपकी पहली बेअसत अरब के अनपढ़ लोगों में हुई और दूसरी बेअसत وَّاٰخَرِیۡنَ مِنۡهُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ के अनुसार आख़रीन में निर्धारित थी। जब यह आयात नाज़िल हुईं तो सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यह पुछा कि यह आख़रीन कौन लोग हैं जिन में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दूसरी बेअसत होगी। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसी मजलिस में मौजूद हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु के कंधे पर हाथ रखकर फ़रमाया

لَوۡ کَانَ الۡاِیۡمَانُ مُعَلَّقًا بِالثُّرَیَّا لَنَالَهٗ رَجُلٌ اَوۡ رِجَالٌ مِنۡ هٰؤُلَآءِ

(बुख़ारी किताब अल् तफ़सीर सूरः जुम्मा)

अर्थात अगर ईमान सुरय्या सितारे पर भी चला गया तो एक फ़ारसी नसल का व्यक्ति या कुछ लोग उस ईमान को दुबारा दुनिया में क़ायम करेंगे।

इन आयात में आख़िरी ज़माना में ज़ाहिर होने वाले फ़ारसी नस्ल के व्यक्ति की बेअसत को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बेअसत क़रार दिया गया है मानो आने वाला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पूर्ण प्रतिरूप होगा।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسۡتَخۡلِفَنَّهُمۡ فِی الۡاَرۡضِ کَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ۪ وَلَیُمَکِّنَنَّ لَهُمۡ دِیۡنَهُمُ الَّذِی ارۡتَضٰی لَهُمۡ وَلَیُبَدِّلَنَّهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِهِمۡ اَمۡنًا ؕ یَعۡبُدُوۡنَنِیۡ لَا یُشۡرِکُوۡنَ بِیۡ شَیۡئًا ؕ وَمَنۡ کَفَرَ بَعۡدَ ذٰلِکَ فَاُولٰٓئِکَ هُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ○

(सूरः नूर : 56)

अनुवाद : तुम में से जो लोग ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें अवश्य ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि उसने उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया और उनके लिए उनके दीन को जो उसने उनके लिए पसंद किया अवश्य दृढ़ता अता करेगा और उनकी भय की हालत के बाद अवश्य उन्हें अमन की हालत में बदल देगा वे मेरी इबादत करेंगे मेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएँगे और जो उसके बाद भी नाशुक्री करे तो यही वे लोग हैं जो नाफ़रमान हैं। इस आयत के सम्बन्ध में हज़रत अली बिन हुसैन ने फ़रमाया : نَزَلَتۡ فِی الۡمَهۡدِیِّ कि यह आयत इमाम महदी के बारे में नाज़िल हुई है। इसी तरह अबू अब्दुल्लाह से रिवायत है कि इस से महदी और उसकी जमाअत मुराद है। (बिहारुल अनवार भाग 13 पृष्ठ 13)

★ ★ ★

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश

इमाम महदी और मसीह मौऊद की बेअसत की ख़बर

یُوۡشِکُ مَنۡ عَاشَ مِنۡکُمۡ اَنۡ یَّلۡقٰی عِیۡسَی بۡنَ مَرۡیَمَ اِمَامًا مَهۡدِیًّا حَکَمًا عَدۡلًا یَکۡسِرُ الصَّلِیۡبَ وَیَقۡتُلُ الۡخِنۡزِیۡرَ ۔

(مسند احمد جلد ۲، صفحہ ۱۵۶)

तुम में से जो जीवित रहेगा वह (इंशाअल्लाह तआला) ईसा इब्ने मरियम का ज़माना पाएगा वही इमाम महदी और हक्म और अदल होगा जो सलीब को तोड़ेगा और सूअर को क़तल करेगा।

عَنۡ اَبِیۡ هُرَیۡرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ قَالَ : قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّمَ : کَیۡفَ اَنۡتُمۡ اِذَا نَزَلَ ابۡنُ مَرۡیَمَ فِیۡکُمۡ وَاِمَامُکُمۡ مِنۡکُمۡ وَفِیۡ رِوَایَةٍ فَاَمَّکُمۡ مِنۡکُمۡ

(بخاری کتاب الانبیاء باب نزول عیسیٰ بن مریم علیہ السلام)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारी हालत कैसी नाज़ुक होगी जब इब्ने मरियम (अर्थात मसील-ए-मसीह) तुम में मबऊस होगा जो तुम्हारा इमाम होगा और तुम में से होगा। एक और रिवायत में है कि तुम में से होने की वजह से वह तुम्हारी इमामत के फ़रायज़ अंजाम देगा ।

ख़िलाफ़त अला मिहाजे नबुव्वत के क़ियाम की ख़ुशख़बरी

عَنۡ حُذَیۡفَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ قَالَ: قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّمَ : تَکُوۡنُ النُّبُوَّةُ فِیۡکُمۡ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنۡ تَکُوۡنَ ثُمَّ یَرۡفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰی ثُمَّ تَکُوۡنُ خِلَافَةٌ عَلٰی مِنۡهَاجِ النُّبُوَّةِ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنۡ تَکُوۡنَ ثُمَّ یَرۡفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰی ثُمَّ تَکُوۡنُ مُلۡکًا عَاضًّا فَتَکُوۡنُ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنۡ تَکُوۡنَ ثُمَّ یَرۡفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰی ثُمَّ تَکُوۡنُ مُلۡکًا جَبۡرِیَّةً فَیَکُوۡنُ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنۡ یَکُوۡنَ ثُمَّ یَرۡفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰی ثُمَّ تَکُوۡنُ خِلَافَةٌ عَلٰی مِنۡهَاجِ النُّبُوَّةِ ثُمَّ سَکَتَ۔

مشکوٰۃ، باب الانذار والتحذیر

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि आँहज़रत अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में नबुव्वत क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा फिर वह उसको उठालेगा और ख़िलाफ़त अला मिनहाज नबुव्वत क़ायम होगी फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा इस नेअमत को भी उठालेगा। फिर उसकी तक़दीर के अनुसार कष्ट देने वाली बादशाहत क़ायम होगी । (जिस से लोग दुखी होंगे और तंगी महसूस करेंगे) जब यह दौर ख़त्म होगा तो उसकी दूसरी तक़दीर के अनुसार इस से भी बढ़कर कष्ट देने वाली बादशाहत क़ायम होगी यहां तक कि अल्लाह तआला का रहम जोश में आएगा और अंधकार और अत्याचार का दौर ख़त्म कर देगा। उसके बाद फिर ख़िलाफ़त अला मिनहाजे नबुव्वत क़ायम होगी। यह फ़रमा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ामोश हो गए।

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना पाओ तो उसे मेरा सलाम पहुंचाना

اَلَا اِنَّ عِیۡسَی بۡنَ مَرۡیَمَ لَیۡسَ بَیۡنِیۡ وَبَیۡنَهٗ نَبِیٌّ وَلَا رَسُوۡلٌ، اَلَا اِنَّهٗ خَلِیۡفَتِیۡ فِیۡ اُمَّتِیۡ مِنۡ بَعۡدِیۡ، اَلَا اِنَّهٗ یَقۡتُلُ الدَّجَّالَ وَیَکۡسِرُ الصَّلِیۡبَ وَیَضَعُ الۡجِزۡیَةَ، وَتَضَعُ الۡحَرۡبُ اَوۡزَارَهَا اَلَا مَنۡ اَدۡرَکَهٗ فَلۡیَقۡرَأۡ عَلَیۡهِ السَّلَامَ ۔ طبرانی الاوسط والصغیر

ख़बरदार हो कि ईसा बिन मर्यम (मसीह मौऊद) और मेरे मध्य कोई नबी या रसूल नहीं होगा। ख़ूब सुन लो कि वह मेरे बाद उम्मत में मेरा ख़लीफ़ा होगा। वह अवश्य दज्जाल को क़तल करेगा। सलीब (अर्थात सलीबी अक़ीदा) को टुकड़े टुकड़े कर देगा और जिज़्या ख़त्म कर देगा (अर्थात उसका रिवाज उठ जाएगा क्योंकि) उस वक़्त में (मज़हबी) जंगों का अंत हो जाएगा । याद रखो जिसे भी उन से मुलाक़ात का सौभाग्य हासिल हो वह उन्हें मेरा सलाम अवश्य पहुंचाए।

★ ★ ★

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के उपदेश)

अब पृथ्वी पर सच्चा धर्म केवल इस्लाम है और सच्चा ख़ुदा भी वही ख़ुदा है जो क़ुर्आन ने वर्णन किया है। और हमेशा का रूहानी जीवन वाला नबी तथा प्रताप एवं पवित्रता के तख़्त पर बैठने वाला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है

हमारा स्वर्ग हमारा एक ख़ुदा है। हमाराzzz परमानन्द हमारे ख़ुदा में है क्योंकि हमने उसका अनुभव किया है। हर प्रकार का सौन्दर्य उसमें विद्यमान है। यह दौलत लेने योग्य है यद्यपि जीवन देकर प्राप्त हो, यह रत्न ख़रीदने योग्य है यद्यपि समस्त अस्तित्व खोकर प्राप्त हो। हे वंचित रहने वालो! इस झरने की ओर दौड़ो कि यह तुम्हें सींचेगा। यह जीवनदायी झरना है जो तुम्हें सुरक्षित रखेगा। मैं क्या करूँ और किस प्रकार इस शुभ सन्देश को हृदयों तक पहुँचाऊँ, किस ढपली से मैं बाज़ारों में मुनादी करूँ कि तुम्हारा ख़ुदा यह है ताकि लोग सुन लें, किस औषधि से मैं उपचार करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।

यदि तुम ख़ुदा के हो जाओ तो निस्सन्देह ख़ुदा तुम्हारा ही है। तुम सोए हुए होगे, और ख़ुदा तुम्हारे लिए जागेगा। तुम शत्रु से बेख़बर होगे पर ख़ुदा उसे देखेगा और उसके प्रयत्नों को विफल करेगा। तुम्हें अभी तक ज्ञात नहीं कि तुम्हारे ख़ुदा में कौन-कौन सी शक्तियां विद्यमान हैं। यदि तुम्हें ज्ञात होता तो तुम पर कोई दिन ऐसा न आता कि तुम संसार के लिए सख्त दुखी होते। एक मनुष्य जो अपने पास एक खज़ाना रखता है क्या वह एक पैसे के व्यर्थ हो जाने से विलाप करता है, चीखें मारता है और मरने लगता है। यदि तुम को उस खज़ाने की सूचना होती कि तुम्हारा ख़ुदा प्रत्येक आवश्यकता के अवसर पर काम आने वाला है, तो तुम सांसारिक वस्तुओं के लिए इतने आपे से बाहर न होते। ख़ुदा एक प्यारा खज़ाना है उसकी क़द्र करो कि वह तुम्हारे प्रत्येक पग पर तुम्हारी सहायता करता है, उसके बिना तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं।

(कश्ती नूह पृष्ठ 21, रूहानी ख़ज़ायन भाग 19)

हमारा ज़िन्दा हय्यो क़य्यूम ख़ुदा हम से इंसान की तरह बातें करता है। हम (उससे) एक बात पूछते तथा दुआ करते हैं तो वह क़ुदरत के भरे हुए शब्दों के साथ उत्तर देता है। यदि यह सिलसिला हज़ार बार तक भी निरंतर चलता रहे तब भी वह उत्तर देने से विमुख नहीं होता। वह अपनी वाणी में विचित्र से विचित्र परोक्ष की बातें प्रकट करता है और विलक्षण क़ुदरतों के नज़ारे दिखाता है। यहां तक कि वह विश्वास करा देता है कि वह वही है जिसको ख़ुदा कहना चाहिए। दुआएं स्वीकार करता है और स्वीकार करने की सूचना देता है। वह बड़ी-बड़ी कठिनाइयां हल करता है और जो मुर्दों के समान बीमार हों उनको भी दुआ की अधिकता से जीवित कर देता है। और अपने यह समस्त इरादे समय पूर्व अपनी वाणी द्वारा बता देता है। ख़ुदा वही ख़ुदा है जो हमारा ख़ुदा है वह अपनी वाणी से जो भविष्य की घटनाओं पर आधारित होती हैं, हम पर सिद्ध करता है कि धरती तथा आकाश का वही ख़ुदा है।

(नसीम-ए-दावत पृष्ठ 448, रूहानी ख़ज़ायन भाग 19)

मैं सदैव आश्चर्य की दृष्टि से देखता हूं कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है (हज़ारों दरूद और सलाम उस पर) यह कि उच्च श्रेणी का नबी है। इस के उच्च स्थान की सीमा ज्ञात नहीं हो सकती तथा उसके पुनीत प्रभाव का अनुमान लगाना मनुष्य का कार्य नहीं। खेद कि उसे यथायोग्य नहीं पहचाना गया। वह एकेश्वरवाद जो संसार से लुप्त हो चुका था वही एक योद्धा है जो उसे दोबारा संसार में लाया, उसने ख़ुदा से असीम प्रेम किया तथा लोगों की असीम सहानुभूति में उसके प्राण निकले। इसलिए ख़ुदा ने जो उसके हृदय के भेद से परिचित था उसे समस्त अंबिया तथा समस्त अगलों और पिछलों पर श्रेष्ठता प्रदान की तथा उसकी मनोकामनाएं उसको उसके जीवन में प्रदान कीं। वही है जो उद्गम प्रत्येक वरदान का है तथा वह व्यक्ति जो उसके वरदान का इक़रार किए बिना किसी श्रेष्ठता का दावा करता है वह मानव नहीं है अपितु शैतान की सन्तान है क्योंकि प्रत्येक श्रेष्ठता की कुंजी उसको दी गई है प्रत्येक अध्यात्म ज्ञान का ख़ज़ाना उसको प्रदान किया गया है जो उसके द्वारा नहीं पाता वह अनादि तौर पर वंचित है। हम क्या वस्तु हैं तथा हमारी वास्तविकता क्या है। हम ने'मत के कृतघ्न होंगे यदि इस बात का इक़रार न करें कि हमने वास्तविक एकेश्वरवाद इसी नबी के माध्यम से पाया, तथा जीवित ख़ुदा की पहचान हमें इसी पूर्ण नबी के द्वारा तथा उसके प्रकाश से प्राप्त हुई है। ख़ुदा के वार्तालाप एवं संवादों का सम्मान भी जिस से हम उसके चेहरे का दर्शन करते हैं इसी महान नबी के द्वारा हमें प्राप्त हुआ है। इस हिदायत रूपी सूर्य की किरण धूप के समान हम पर पड़ती है तथा हम उसी समय तक प्रकाशमान रह सकते हैं जब तक कि हम उसके सामने खड़े हैं।

(हक़ीक़तुल वह्यी, हानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 118)

हे समस्त वे लोगो जो पृथ्वी पर रहते हो! और हे वे समस्त इन्सानी रूहो जो पूरब और पश्चिम में आबाद हो! मैं पूरे ज़ोर के साथ आप को इस ओर बुलाता हूं कि अब पृथ्वी पर सच्चा धर्म केवल इस्लाम है और सच्चा ख़ुदा भी वही ख़ुदा है जो क़ुर्आन ने वर्णन किया है। और हमेशा का रूहानी जीवन वाला नबी तथा प्रताप एवं पवित्रता के तख़्त पर बैठने वाला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है जिसके रूहानी जीवन और पवित्र प्रताप का हमें यह सबूत मिला है कि उसके अनुकरण और प्रेम से हम रूहुल क़ुदुस तथा ख़ुदा से वार्तालाप और आकाशीय निशानों के इनाम पाते हैं। (तिर्याक़ुल क़ुलूब पृष्ठ 11 रुहानी ख़ज़ायन भाग 15)

मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि जो मनुष्य क़ुर्आन के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह मुक्ति द्वार को स्वयं अपने लिए बंद करता है। वास्तविक और पूर्ण मुक्ति के मार्ग क़ुर्आन ने प्रदर्शित किए, शेष सभी उसकी तुलना में छाया मात्र थे। अतः तुम क़ुर्आन का पूरी सतर्कता से अध्ययन करो और उससे अत्यधिक प्रेम करो, ऐसा प्रेम जो तुम ने किसी से न किया हो। क्योंकि जैसा ख़ुदा ने मुझे संबोधित करते हुए फ़रमाया

اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي الْقُرْاٰنِ

अलख़ैरो कुल्लुहू फ़िलक़ुर्आन : कि समस्त प्रकार की भलाइयां क़ुर्आन में हैं। यही बात सत्य है। खेद है उन लोगों पर जो किसी अन्य वस्तु को उस पर प्राथमिकता देते हैं। तुम्हारी सम्पूर्ण सफलता और मुक्ति का स्रोत क़ुर्आन में निहित है। तुम्हारी कोई भी धार्मिक आवश्यकता ऐसी नहीं जिसका समाधान क़ुर्आन में न हो। प्रलय के दिन तुम्हारे ईमान के सच्चे या झूठे होने की कसौटी क़ुर्आन है। आकाश के नीचे क़ुर्आन के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं जो किसी अन्य पर निर्भर हुए बिना तुम्हारा पथ-प्रदर्शन कर सके। ख़ुदा ने तुम पर आपार कृपा की है जो क़ुर्आन जैसी पुस्तक तुम्हें प्रदान की। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि वह पुस्तक जो तुम्हारे सम्मुख पढ़ी गई यदि ईसाइयों के सम्मुख पढ़ी जाती तो वे तबाह न होते। यह उपकार और पथ-प्रदर्शन जो तुम्हें उपलब्ध किया गया यदि (तौरात) को छोड़ कर यहूदियों को उपलब्ध कराया जाता तो उनके कुछ समूह प्रलय का इन्कार न करते। अतः इस उपकार के महत्त्व को समझो जो तुम्हारे साथ किया गया। यह अति उत्तम उपकार है यह अपार संपत्ति है। यदि क़ुर्आन न आता तो समस्त संसार एक अपवित्र और तुच्छ लोथड़े की भांति था। क़ुर्आन वह पुस्तक है जिसके समक्ष सभी पथ-प्रदर्शन तुच्छ हैं।

(कश्ती नूह , रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 26)

★ ★ ★

ख़ुदा तआला का अस्तित्व क़बूलियत दुआ के आलोक में

मुहम्मद करीमुद्दीन शाहिद, सदर,सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

भाषण जल्सा सालाना क़ादियान 2021

अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाता है :

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَلْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ یَرْشُدُوْنَ

(अल्बक़रः : 187)

और जब मेरे बंदे तुझ से मेरे सम्बन्ध में प्रश्न करें तो निसंदेह मैं क़रीब हूँ। मैं दुआ करने वाले की दुआ का उत्तर देता हूँ। जब वह मुझे पुकारता है। अतः चाहिए कि वह भी मेरी बात पर लब्बैक कहें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वे हिदायत पाएं।

ख़ाकसार की तक़रीर का शीर्षक है "हस्ती बारी तआला (ख़ुदा तआला का अस्तित्व) दुआ की स्वीकृति की रोशनी में" ख़ाकसार ने सूरः अल्बक़रः की जो आयत और उसका अनुवाद शुरू में पढ़ा है इसमें अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संबोधित करके फ़रमाया है कि हे मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जब मेरे बंदे मेरी ज़ात और मेरी हस्ती के बारे में तुझ से प्रश्न करें कि ख़ुदा तआला की हस्ती का क्या सबूत है तो उनको उत्तर दे कि मैं तो उनके बिल्कुल क़रीब हूँ और उसकी चिह्न यह है कि जब वह मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ को क़बूल करके उसका उत्तर देता हूँ जो दलील है इस बात की कि मैं मौजूद हूँ। मेरा वजूद कोई वहम नहीं बल्कि एक ज़िंदा हक़ीक़त है। मैं ही इस कायनात का स्रष्टा और मालिक हूँ जो इस समस्त संसार के कारख़ाने को चला रहा है। मानो ख़ुदा तआला ने इस आयत-ए-करीमा में इस बात का प्रकटन किया है कि वह ख़ुदा केवल नाम का बादशाह नहीं और न ही वह अपने पैदा-कर्दा क़ानून का ग़ुलाम है कि इस में किसी सूरत में कभी तबदीली न कर सके। बे-शक वह अपनी सुन्नत और वादे के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं करता परन्तु वह एक ज़िंदा और मुतसर्रिफ़ ख़ुदा है जो अपने बंदों की दुआओं को सुनता है और उन पर यक़ीनी नतायज मुरत्तिब करता है।

जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने क्या ही ख़ूब फ़रमाया है :

तुझे दुनिया में है किस ने पुकारा
कि फिर ख़ाली गया क़िस्मत का मारा
तो फिर है किस क़दर उसको सहारा
कि जिसका तू ही है सबसे प्यारा
हुआ में तेरे फ़ज़्लों का मुनादी!
فسبحان الذی اَخزی الاعادی

इस्लाम ने न केवल दुआ के विषय को विस्तार के साथ वर्णन करके इस पर ख़ास ज़ोर दिया है बल्कि मुसलमानों को दुआ का अमली सबक़ देने और दुआ का आदी बनाने के लिए इन्सान के हर कार्य के साथ कोई न कोई दुआ निर्धारित कर दी है ताकि उसकी कोई घड़ी ख़ुदा की याद से ख़ाली न रहे और यह आदत हमेशा उसे याद दिलाती रहे कि हमारा एक ज़िंदा और सर्वशक्तिमान ख़ुदा है जो हमारी दुआओं को सुनता और फिर उसके अच्छे परिणाम प्रकट करता रहता है।

वर्तमान युग के इमाम सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी मसीह मौऊद-ओ-मह्दी माहूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"नादान ख़्याल करता है कि दुआ एक व्यर्थ और बेहूदा कार्य है। परन्तु उसे मालूम नहीं है कि केवल एक दुआ ही है जिस से ख़ुदावंद ज़ुलजलाल ढूढ़ने वालों पर तजल्ली करता और "अनाल् क़ादिर" का इल्हाम उनके दिलों पर डालता है। हर एक यक़ीन का भूखा और प्यासा याद रखे कि इस ज़िंदगी में रुहानी रोशनी के तालिब के लिए केवल दुआ ही एक माध्यम है जो ख़ुदा तआला की हस्ती पर यक़ीन प्रदान करता और समस्त संदेहों को दूर कर देता है।"

(अय्यामुस सुलह,रुहानी ख़ज़ायन, भाग 14 पृष्ठ 239)

और फ़रमाया

"कठिन परिस्थितियों में ही दुआओं की विचित्र विशेषताएं और प्रभाव प्रकट होते हैं और सच्च तो यह है कि हमारा ख़ुदा तो दुआओं ही से पहचाना जाता है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 147 मुद्रित क़ादियान 2003 ई.)

इसी तरह आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "ख़ुदा तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में एक जगह पर अपनी पहचान यह निशान ठहराया है कि तुम्हारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो बेक़रारों की दुआ सुनता है जैसा कि वह फ़रमाता है اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ फिर जबकि ख़ुदा तआला ने दुआ की क़बूलियत को अपनी हस्ती की अलामत ठहराया है तो फिर किस तरह कोई अक़्ल और हया वाला गुमान कर सकता है कि दुआ करने पर कोई स्वीकृति के प्रमाण प्रकट नहीं होते और केवल एक रस्मी कार्य है जिसमें कुछ भी रूहानियत नहीं? मेरे ख़्याल में है कि ऐसी बे-अदबी कोई सच्चे ईमान वाला कदापि नहीं करेगा जबकि प्रतापी अल्लाह फ़रमाता है कि जिस तरह ज़मीन और आसमान की सिफ़त पर ग़ौर करने से सच्चा ख़ुदा पहचाना जाता है उसी तरह दुआ की क़बूलियत को देखने से ख़ुदा तआला पर यक़ीन आता है।"

(अय्यामुस सुलह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 14 पृष्ठ 259)

प्रिय श्रोतागणों विश्व में पाए जाने वालो धर्मों के इतिहास और रिवायत से हमें यह बात बड़ी नुमायां तौर पर नज़र आती है कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से अवतरित होने वाले हर नबी ने दुआ की स्वीकृति के माध्यम से ज़िंदा ख़ुदा की हस्ती का सबूत दिया है। क़ुरआन-ए-मजीद ने असंख्य नबी और उन के मुख़ालिफ़ीन का वर्णन करते हुए दुआ की स्वीकृति के कई वाक़ियात वर्णन किए हैं। यह हज़रत-ए-आदम अलैहिस्सलाम ही की दुआ और अल्लाह तआला के सम्पर्क का प्रभाव था कि उस ज़माने के सरकश और मुतकब्बिर सरदार इबलीस और उसके चेलों का बुरा अंजाम हुआ और वे ख़ुदा के दरबार से प्रताड़ित किए गए। हज़रत-ए-नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ने आप अलैहिस्सलाम को झुठला कर बड़ी अज़ीयत दी और उपहास किया। आप अलैहिस्सलाम ने दुआ की رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا (नूह:27) हे ख़ुदा ऐसे नाशुक्रगुज़ार, बदक़िस्मत बदकार और मुतकब्बिर लोगों को दुनिया से मिटा दे। इसके परिणाम में ऐसा सेलाब (बाढ़) आया कि बस्तियों की बस्तियां तबाह-ओ-बर्बाद हो गईं और केवल वही बचे जो नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती पर सवार थे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ का नतीजा था कि नमरूद की आग फूलों में तबदील हो गई और यह आप की दुआ का करिश्मा था कि आपकी औलाद में अल्लाह तआला ने एक नसल के बाद दूसरी नस्ल में बेशुमार अम्बिया अवतरित फ़रमाए जिनमें से नुमायां हज़रत-ए-मूसा और हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम और अंत में हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ातमुन

नबिय्यीन का ताज अपने सर पर सजाए दुनिया में ज़ाहिर हुए। यह हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ का ही चमत्कार था कि उनके हाथ की एक मामूली लाठी जादूगरों के जादू के मुक़ाबिल अज़दहा (बड़ा सांप) बन गई जो जादूगरों के ईमान लाने का माध्यम हुई और जब फ़िरऔन जैसे ज़ालिम और जाबिर बादशाह ने अपने लश्कर के साथ बनी इस्राइल का पीछा किया तो आप अलैहिस्सलाम की क़ौम घबरा कर बे-इख़्तियार पुकार उठी थी कि اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ कि हे मूसा अब तो हम पकड़े गए। लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ क़बूल फ़रमाई और आप अलैहिस्सलाम ने क़ौम को तसल्ली दी كَلَّا اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ (शूरा **:43)**नहीं नहीं ऐसा कदापि न होगा, मेरा रब अवश्य मेरे साथ है और वह मुझे कामयाबी का रास्ता दिखलाएगा। नतीजा क्या हुआ? फ़िरऔन और उसका लश्कर डूब गया और मूसा की क़ौम बहिफ़ाज़त मुल्क किनान चली गई। हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम को यहूद ने झूठा क़रार देकर सलीब पर मारना चाहा था कि वह लानती मौत मर के झूठे क़रार पाउं। परन्तु हज़रत मसीह ने गतसमने के बाग़ में रात रो-रो कर दुआ की कि हे ख़ुदा हो सके तो यह पियाला मुझ से टाल दे और जब सलीब पर आपको लटकाया गया तो फिर दुआ की ایلی ایلی لما سبقتانی कि हे मेरे ख़ुदा तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया । यह उसी दुआ की क़बूलियत का परिणाम है कि हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने सलीब की लानती मौत से न केवल बचाया बल्कि सलीब से आप अलैहिस्सलाम को ज़िंदा उतारा गया। फिर ज़ख़्मों का ईलाज होने के बाद आप ने यरोशलम से हिज्रत करके कश्मीर तक का लंबा सफ़र तै किया।

मित्रो! भारत की सरज़मीन में हज़रत राम चन्द्र जी महाराज की दुआ ही का प्रभाव था कि बनवास और देशनिकाला की बेबस और बिना सामग्री सामान की ज़िंदगी के अतिरिक्त उन्हें रावण जैसे ज़ालिम और ताक़तवर राजा के अंत और लंका पर विजय हासिल हुई और हज़रत कृष्ण जी महाराज ही की दुआ का यह परिणाम था कि कंस जैसा पापी और प्रभावी राजा आप अलैहिस्सलाम के समक्ष हलाक हुआ और कौरवों की बड़ी संख्यां के बावजूद हज़रत कृष्ण जी की दुआ और उपदेश के नतीजा में पांडवों को न केवल विजय नसीब हुई बल्कि गीता जैसी मुक़द्दस किताब का ज्ञान दुनिया को मिला। और सबसे बढ़कर हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात तो पुर्णतः दुआ थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही की दुआ के नतीजा में दुनिया में अल्लाह तआला ने वह बड़े बड़े इन्क़िलाब बरपा किए कि बावजूद शदीद मुख़ालिफ़त और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को और आपके अनुयाइयों तथा इस्लाम को मिटाने की हद दर्जा कोशिशों के चंद सालों में ही न केवल इस्लाम मुल्क अरब में फैल गया बल्कि धीरे धीरे सारी दुनिया में इस्लाम का बोल-बाला हो गया। इस अज़ीम इन्क़िलाब के बारे में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"वह जो अरब के ब्याबान मुल्क में एक अजीब बात हुई कि लाखों मुर्दे थोड़े दिनों में ज़िंदा हो गए और पुश्तों के बिगड़े हुए इलाही रंग पकड़ गए और आँखों के अंधे देखने योग्य हुए गूंगों के मुख पर इलाही मआरिफ़ जारी हुए और दुनिया में यक दफ़ा एक ऐसा इन्क़िलाब पैदा हुआ कि न पहले इस से किसी आँख ने देखा और न किसी कान ने सुना कुछ जानते हो कि वह किया था? वह एक फ़ानी फ़ी अल्लाह की अँधेरी रातों की दुआएं ही थीं जिन्हों ने दुनिया में शोर मचा दिया और वे अजायब बातें दिखलाएँ जो उस उम्मी बेकस से असम्भव की तरह नज़र आती थीं।

اللّٰھم صل وسلم وبارك علیه واله بعدد همه وغمه وحزنه لهذه الامة وانزل علیه انوار رحمتك الی الابد۔

और मैं अपने ज़ाती अनुभव से भी देख रहा हूँ कि दुआओं की तासीर पानी और आग की तासीर से बढ़ कर है बल्कि प्रकृति संसाधनों के सिलसिला में कोई वस्तु ऐसी अज़ीम बड़ी तासीर नहीं जैसी कि दुआ है।"

(बर्कातुत दुआ, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 10)

उपस्थित गणों अल्लाह तआला अपनी हस्ती के सबूत के लिए अपने मामूरीन-और-मुर्सलीन की दुआएं बकसरत क़बूल फ़रमाता है और यह विषय इतना बड़ा है कि समस्त वाक़ियात का वर्णन करना मानो सागर को मटके में बंद करने के समकक्ष होगा। जबकि कुछ ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात बतौर उदाहरण पेश करने पर संतुष्टि की जाती है।

सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दावा-ए-नुबूव्वत फ़रमाया तो वही क़ौम जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सच्चा और अमीन कह कर आपका सम्मान किया करती थी उसी क़ौम ने न आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को झुठलाया बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को और आप के मानने वालों को इंतिहाई अज़ीयत-नाक तकालीफ़ दी। आपके क़तल के मंसूबे बनाए गए और आपके कई साथियों को क़तल भी किया। इस वहशतनाक दौर में सबसे ज़्यादा मुख़ालिफ़त में पेश पेश मक्का के दो प्रभावी सरदार थे। एक अम्र बिन हिशाम अबू जहल और दूसरे उमर बिन ख़िताब। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुज़ूर यह दुआ की कि "हे अल्लाह इन दो व्यक्तियों अम्र बिन हिशाम और उमर बिन ख़त्ताब में से किसी एक के द्वारा (जो तुझे पसंद हो) इस्लाम को इज़्ज़त और क़ुव्वत नसीब फ़र्मा।"

(तिरमिज़ी, किताब अल् मनाकिब, बाब 18)

फिर दुनिया ने देखा कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दुआ को ऐसे हैरत-अंगेज़ चमत्कारिक रूप में क़बूल फ़रमाया कि वही उमर जो घर से तलवार लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करने निकले थे ख़ुद क़ुरआन-ए-मजीद की पुर शौकत हिदायत और दुआ की तलवार से घायल हो कर मुसलमान हो गए जिस से मुसलमानों को बड़ा हौसला मिला। मक्का के मुशरिकों ने जब मुसलमानों जीवन शेली तंग की तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबारज़ियल्लाहु अन्हु को मक्का से हिज्रत करके मदीना आबाद होना पड़ा। लेकिन अभी एक वर्ष ही हिज्रत पर पूरा हुआ था कि 2 हिजरी हमें मक्का के मुशरिकों ने मदीना पर चढ़ाई करके मुसलमानों को मिटाना चाहा। इस वक़्त बदर के स्थान पर जो जंग लड़ी गई मुसलमानों की संख्यां केवल 313 थी जो तक़रीबन बिना शस्त्रों के थे और कुफ़्फ़ार का लश्कर एक हज़ार प्रतिभाशाली सिपाहियों पर मुश्तमिल शस्त्रों सहित था। उस अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अत्यधिक रौ रौ के साथ दुआ की कि "हे मौला आज अगर तूने इस छोटी सी एकेश्वरवादी जमाअत को हलाक (नष्ट) कर दिया तो फिर तेरी इबादत कौन करेगा।"

(बुख़ारी, किताब अलमग़ाज़ी, बाब 4)

बदर के झोंपड़े में की जाने वाली यह दर्द भरी दुआ ही थी कि ख़ुदा के समक्ष में जब स्वीकृत हुई तो उसने कंकरों की एक मुट्ठी को भयानक तूफ़ान में बदल के रख दिया और 313 बिना शस्त्रों वाले मुसलमानों को मुशरिकीन के एक हज़ार शस्त्रों वाले प्रतिभाशाली लड़ाकुओं पर फ़तह अता फ़रमाई।

मित्रो ज़िंदा ख़ुदा की ज़िंदा हस्ती का एक और वाक़िया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में उस वक़्त भी प्रकट हुआ जब शहनशाह-ए-ईरान ख़ुसरो परवेज़ सानी ने यहूदियों के उकसाने पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गिरफ़्तारी का हुक्म अपने यमन के गवर्नर बाज़ान को दिया कि मुद्दई नबुव्वत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को पकड़ कर मेरे पास भिजवा दो। इसलिए बाज़ान ने दो सिपाही मदीना भिजवाए कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पकड़ कर लाएंगे। उन सिपाहियों =ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह हुक्म सुनाया और साथ ही यह वार्निंग दी कि अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किसरा के हुक्म का इंकार

करेंगे तो वे आपको और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुल्क को बर्बाद कर देगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको उत्तर दिया कि तुम कल सुबह आकर मुझसे मिल लेना इसलिए आपने रात अल्लाह तआला से दुआ की और ख़ुदाए ज़ुल जलाल ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दी कि किसरा की गुस्ताख़ी की सज़ा में हमने उस पर उसके बेटे को प्रबल कर दिया है। इसलिए सुबह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन दो सिपाहियों को सूचना दी कि जाओ आज की रात मेरे ख़ुदा ने तुम्हारे ख़ुदावंद को मार दिया है और ऐसा ही ज़हूर में आया कि जिस रात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने किसरा इरान के बादशन ख़ुसरो परवेज़ सानी के क़तल की ख़बर दी थी उसी रात उसके बेटे शेरविया ने जिसको अंग्रेज़ी में siross कहा जाता है उसे क़तल करके हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में ले ली और यमन के गवर्नर को हिदायत दी कि मेरे बाप ने जिस मुद्दई नबुव्वत को गिरफ़्तार करने का हुक्म दिया था मैं उसको निरस्त करता हूँ। सुब्हान अल्लाह ।

इस ख़बर को सुनकर न केवल गवर्नर बज़ान बल्कि इस इलाक़े में रहने वाले बहुत से ईरानी बाशिंदों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। فالحمدللہ علیٰ ذالك

प्रिय श्रोतागणों दुआ की स्वीकृति के वाक़ियात केवल गुज़रे ज़माने की बातें नहीं बल्कि अल्लाह तआला ने अपनी ज़िंदा हस्ती का सबूत देने के लिए हमारे ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़-ए-सादिक़ और ग़ुलाम सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम को अवतरित फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते फ़रमाते हैं :

"हमारा ज़िंदा सर्वशक्तिमान ख़ुदा हमसे इन्सान की तरह बातें करता है। हम एक बात पूछते और दुआ करते हैं तो वह क़ुदरत के भरे हुए शब्दों के साथ उत्तर देता है। अगर यह सिलसिला हज़ार मर्तबा तक भी जारी रहे तब भी वह उत्तर देने से पीछे नहीं हटता। वह अपने कलाम में अजीब दर अजीब ग़ैब की बातें ज़ाहिर करता है और विचित्र क़ुदरतों के नज़्ज़ारे दिखलाता है। यहां तक कि वह यक़ीन करा देता है कि वह वही है जिस को ख़ुदा कहना चाहिए।"

(नसीम-ए-दावत, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 448)

ख़ुदा तआला की हस्ती के सबूत में आप अलैहिस्सलाम ने अपनी किताब हकीकतुल वह्यी में दो सौ आठ निशान दर्ज फ़रमाए हैं उनमें से केवल एक निशान दुआ की स्वीकृति का पेश करता हूँ जो ज़िंदा ख़ुदा की ज़िंदा हस्ती पर मुहँ बोलता प्रमाण है। आप अलैहिस्सलाम हैं :

"अब्दुल करीम नाम पिता अब्दुर्रहमान स्थान हैदराबाद दक्कन हमारे मद्रसे में एक लड़का विद्यार्थी है। संयोग से उसको पागल कुत्ता काट गया हमने उसको उपचार के लिए कसौली भेज दिया। कुछ दिनों तक उस का कसौली में उपचार होता रहा फिर वह क़ादियान में वापस आया थोड़े दिन गुज़रने के बाद इस मैं वह संकेत पागलपन के ज़ाहिर हुए जो पागल कुत्ते के काटने के बाद ज़ाहिर हुआ करते हैं और पानी से डरने लगा और ख़ौफ़नाक हालत पैदा हो गई। तब इस आजिज़ के लिए मेरा दिल सख़्त बेक़रार हुआ और दुआ के लिए एक ख़ास तवज्जा पैदा हो गई। हर एक व्यक्ति समझता था कि वह ग़रीब चंद घंटे के बाद मर जाएगा। न चाहते हुए भी उसको बोर्डिंग से बाहर निकाल कर एक अलग मकान में दूसरों से अलग हर एक सावधानी से रखा गया और कसौली के अंग्रेज़ डाक्टरों की तरफ़ तार भेज दिया और पूछा गया कि इस हालत में इस का कोई ईलाज भी है? इस तरफ़ से तार के माध्यम से उत्तर आया कि अब इसका कोई ईलाज नहीं। परन्तु इस ग़रीब और बेवतन लड़के के लिए मेरे दिल में बहुत तवज्जा पैदा हो गई और मेरे दोस्तों ने भी इसके लिए दुआ करने के लिए बहुत ही ज़ोर दिया क्योंकि इस ग़ुर्बत की हालत में वह लड़का काबिल-ए-रहम था और तथा दिल में यह भय पैदा हुआ कि यदि वह मर गया तो एक बुरे रंग में उसकी मौत आरोप लगाने वालों की प्रसन्नता का कारण होगी। तब मेरा दिल उसके लिए सख़्त दर्द और बेक़रारी में ग्रस्त हुआ और ख़ारिक़ आदत तवज्जा पैदा हुई जो अपने इख़तियार से नहीं पैदा नहीं होती बल्कि केवल ख़ुदा की तरफ़ से पैदा होती है और अगर पैदा हो जाए तो ख़ुदा तआला के इरादा से वह असर दिखाती है कि क़रीब है कि इस से मुर्दा ज़िंदा हो जाए। ग़रज़ इसके लिए इक़बाल इलल्लाह की हालत मयस्सर आ गई और जब वह तवज्जा इंतिहा तक पहुंच गई और दर्द ने अपना पूरा तसल्लुत मेरे दिल पर कर लिया तब इस बीमार पर जो दरहक़ीक़त मुर्दा था इस तवज्जा के आसार ज़ाहिर होने शुरू हो गए और या तो वह पानी से डरता और रोशनी से भागता था और एक दफ़ा तबीयत ने सेहत की तरफ़ रुख किया और उसने कहा कि अब मुझे पानी से डर नहीं लगता। तब उसको पानी दिया गया तो उसने बग़ैर किसी भय के पी लिया जब कि पानी से वुज़ू करके नमाज़ भी पढ़ ली और समस्त रात सोता रहा और ख़ौफ़नाक और वहशियाना हालत जाती रही यहां तक कि कुछ दिनों तक पूर्णता सेहत याब हो गया। मेरे दिल में तुरंत डाला गया कि यह दीवानगी की हालत जो इस में पैदा हो गई थी यह इसलिए नहीं थी कि वह दीवानगी उसको हलाक करे बल्कि इसलिए थी कि ता ख़ुदा का निशान ज़ाहिर हो और अनुभवी लोग कहते हैं कि कभी दुनिया में ऐसा देखने में नहीं आया कि ऐसी हालत में कि जब किसी को पागल कुत्ते ने काटा हो और पागलपन के आसार ज़ाहिर हो गए हों फिर कोई व्यक्ति इस हालत से बच सके।"

(ततिम्मा हकीक़तुल वह्यी,रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 480)

हज़रात आज जबकि मैडीकल साईंस ने बेहद तरक़्क़ी करके बहुत से लाइलाज रोगों के ईलाज दरयाफ़त कर लिए हैं लेकिन यह भी एक हक़ीक़त है कि दीवाना कुत्ते के काटने के आजकल anti rabbies टीका लगाने से मर्ज़ ठीक तो हो जाता है लेकिन दुबारा दीवानगी का हमला होने पर आज भी इसका कोई ईलाज नहीं है और यह निशान अल्लाह तआला की क़ुदरत-नुमाई और अपनी हस्ती का ज़िंदा सबूत है।

उपस्थित गणों हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त अला मिनहाज नबुव्वत क़ायम हो चुकी है और ख़ुलफ़ाए अहमदियत के माध्यम से भी अल्लाह तआला दुआ की स्वीकृति के माध्यम से अपनी हस्ती का सबूत देता चला आ रहा है। वक़्त की रियायत से कुछ एक चुने हुए वाक़ियात पर इकतिफ़ा किया जाता है।

हज़रत मौलाना नुरुद्दीन ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के ज़माने की बात है कि हज़रत चौधरी हाकिम दीन साहिब क़ादियान में बोर्डिंग हाऊस में मामूली मुलाज़िम थे। आपके पहले बच्चे के जन्म के समय आपकी पत्नी की तकलीफ़ बहुत बढ़ गई। आप वर्णन करते हैं कि इस हालत में कोई और सूरत न पाकर रात ग्यारह बजे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के घर पहुंचा और चौकीदार से कहा कि क्या मैं इस वक़्त हुज़ूर से मिल सकता हूँ? चौकीदार ने न में उत्तर दिया लेकिन हुज़ूर ने मेरी आवाज़ सुन ली और मुझे अन्दर बुलाया मैंने पत्नी की तकलीफ़ का वर्णन किया। आपने खजूर पर दुआ पढ़ कर मुझे दी और फ़रमाया यह जाकर अपनी पत्नी को खिला दो और जब बचा हो जाए तो मुझे भी सूचना दे दें। हज़रत हकीम दीन कहते हैं कि मैंने वह खजूर अपनी पत्नी को खिला दी। उस खजूर ने हैरत-अंगेज़ तौर पर चमत्कारिक रूप में प्रभाव दिखाया और थोड़ी देर बाद बच्ची का जन्म हो गया। वह कहते हैं कि मैंने रात के वक़्त हुज़ूर को जगाना मुनासिब नहीं समझा कि आप सो रहे होंगे जब सुबह फ़ज्र के बाद हाज़िर हुआ और सारा हाल अर्ज़ किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया बच्ची पैदा होने के बाद तुम पति पत्नी तो आराम से सोते रहे अगर मुझे भी सूचना दे दी होती तो मैं भी आराम कर लेता मैं समस्त रात तुम्हारी पत्नी के लिए दुआ करता रहा हूँ। यह वाक़िया वर्णन करते हुए हाकिम दीन साहिब बे-इख़्तियार रौ पड़े और कहने लगे कहाँ चपड़ासी हाकिम-ए-दीन और कहाँ नुरुद्दीन आज़म। (रोज़नामा अल् फ़ज़ल दुआ, पृष्ठ नंबर 44)

यह है ख़ुल्फ़ा-ए-अहमदियत की शान जो अपनी जमाअत के लोगों के लिए इस क़दर शफ़ीक़ और मेहरबान हैं कि उनके दुखों को अपने सीने में

समेट कर सारी सारी रात तड़पते हुए उनके लिए ख़ैर और भलाई की दुआएं करते हैं। इसी भावना का प्रकटन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक मर्तबा जमाअत से संबोधित हो कर फ़रमाया था कि "तुम्हारे लिए एक व्यक्ति तुम्हारा दर्द रखने वाला है और तुम्हारी मुहब्बत रखने वाला और तुम्हारे दुख को अपना दुख समझने वाला तुम्हारी तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ जानने वाला और तुम्हारे लिए ख़ुदा के हुज़ूर दुआएं करने वाला है ... और वह तुम्हारे लिए अपने मौला के हुज़ूर तड़पता रहता है।"

हज़रत सय्यदा महर आपा वर्णन फ़रमाती हैं कि 1953 की जंग के ज़माने में केवल अहमदियत की दुश्मनी के नतीजा में हज़रत मियां नासिर अहमद साहिब खलीफ़तुल मसीह सालिस और हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ैद कर लिया गया जब रात के खाने के वक़्त उनका वर्णन हुआ तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया

"अल्लाह तआला उन पर रहम फ़रमाए वे केवल इस जुर्म पर पकड़े गए हैं कि उनका कोई जुर्म नहीं। इसलिए मुझे अपने ख़ुदा पर कामिल यक़ीन और ईमान है कि वह जल्दी ही उन पर फ़ज़ल करेगा।"

आप फ़रमाती हैं कि इशा की नमाज़ के लिए आप खड़े हुए और दुआ में वह तड़प और बेक़रारी थी कि मैं भूल नहीं सकती और यही हाल तहज्जुद की नमाज़ में भी था। इसलिए जब दिन चढ़ा और डाक का वक़्त हुआ तो पहला तार जो मिला वह यह ख़ुशख़बरी लिए हुए था कि हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु और मियां नासिर अहमद साहिब रिहा हो चुके हैं। कितनी जल्दी मेरे ख़ुदा ने मुझे दुआ की स्वीकृति का चमत्कार दिखाया।

(रोज़नामा अलफ़ज़ल, दुआ, पृष्ठ 43)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला के ज़माने की बात है। मुहम्मद अमीन ख़ालिद साहिब जर्मनी से वर्णन करते हैं कि आज से 45 वर्ष पूर्व मेरे सीने की हड्डी में दर्द उठा। मुख़्तलिफ़ डाक्टरों से ईलाज करवाया। हर किस्म के टैस्ट करवाए गए लेकिन दर्द में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। डाक्टर भी बेबस हो गए और मुझे ला-इलाज क़रार दे दिया और कहा कि अब जो चंद दिन ज़िंदगी के बाक़ी रह गए हैं वह इसी तकलीफ़ में गुज़ारो। इसी दौरान 1980 में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस हिमबर्ग तशरीफ़ लाए। ख़ाकसार इस्तिक़बाल के लिए लाइन में खड़ा था मैंने सौभाग्य से हाथ मिलाते हुए अपनी तकलीफ़ बता दी और कहा कि डाक्टरों ने ला-इलाज क़रार दे दिया है कि मुझे इस तकलीफ़ से मुक्ति नहीं मिल सकती। इस पर हुज़ूर रहमहुल्लाह ने बड़े पुर जलाल अंदाज़ में फ़रमाया कौन कहता है कि आराम नहीं आ सकता। फिर हुज़ूर रहमहुल्लाह ने मेरी क़मीज़ का एक बटन अपने दस्त मुबारक से खोला और मेरे सीने पर एक दायरा बनाया और फ़रमाया कि क्या यहां दर्द होता हे मैंने कहा जी हुज़ूर इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया हम दुआ करेंगे इं शा अल्लाह आराम आ जाएगा घबराएँ नहीं। इसलिए अमीन साहिब बताते हैं कि आज इस को 35 वर्ष हो चुके हैं और वह दिन और आज का दिन मेरी यह हालत है कि जैसे यह तकलीफ़ मुझे कभी हुई ही नहीं थी।

क़ुदरत से अपनी ज़ात का देता है हक़ सबूत
उस बे-निशाँ की चेहरा-नुमाई यही तो है।

प्रिय श्रोतागणों! हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह की दुआ की स्वीकृति का एक वाक़िया बड़ा ही ईमान अफ़रोज़ है। पश्चिमी अफ़्रीक़ा के शहर घाना के एक चीफ़ नाना ओजीफ़ो धर्म से ईसाई थे और एक भ्रमवादी क़ौम से सम्बन्ध रखते थे, उनकी पत्नी का गर्भ हर दफ़ा ख़राब हो जाता था। वह ईसाई पादरियों और दम फूंक करने वालों के पास गए परन्तु कोई फ़ायदा नहीं हुआ। जब हर तरफ़ से मायूस हो गए तो आखिर कार जमाअत अहमदिया के इमाम अब्दुल वहाब आदम साहिब के पास आए और कहा कि हूँ तो मैं ईसाई लेकिन मुझे ईसाइयत पर से दुआ का यक़ीन उठ गया है। मैंने सुना है कि ख़ुदा आप लोगों की दुआएं क़बूल करता है। आप अपने इमाम को मेरी तरफ़ से समस्त हालात बता कर लिखें कि हमारे लिए दुआ करें। इसलिए वहाब आदम साहिब ने उनका पत्र हुज़ूर को भिजवा दिया। हुज़ूर अनवर ने उत्तर में उनको लिखा कि आपको बच्चा नसीब होगा और बहुत ही ख़ूबसूरत और आयु पाने वाला बच्चा होगा। इसलिए जब उनकी पत्नी को गर्भ हुआ तो डाक्टरों ने कहा कि न केवल यह बच्चा मर जाएगा बल्कि पत्नी को भी ले मरेगा इसलिए तुम इस गर्भ को नष्ट करवा दो। उस चीफ़ ने कहा कदापि नहीं मुझे इमाम जमाअत अहमदिया का पत्र आया है। न मेरी पत्नी को कोई नुक़्सान पहुंचेगा और न मेरे बच्चे को नुक़्सान पहुँचेगा। अतः अल्लाह तआला ने उनको निहायत ही ख़ूबसूरत सेहत मंद बच्चा अता फ़रमाया और उनकी पत्नी भी बिल्कुल ठीक ठाक रहीं। दुआ की स्वीकृति के इस निशान को देखकर उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह के दस्त मुबारक पर बैअत कर ली।

ग़ैर मुम्किन को यह मुम्किन में बदल देती है
हे फ़लसफ़ीयो ! ज़ोर-ए- दुआ देखो तो

अंत में ख़ाकसार हमारे प्यारे इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआ की स्वीकृति का एक वाक़िया वर्णन करता है कि हुज़ूर जब 2004 में गाना तशरीफ़ ले गए तो एक अवसर पर सफ़र के दौरान आपने गाना को बशारत दी कि घाना की ज़मीन से तेल निकलेगा। इसलिए 2008 में जब हुज़ूर अनवर ख़िलाफ़त जुबली के अवसर पर दुबारा घाना तशरीफ़ ले गए तो घाना के प्रधानमंत्री ने मुलाक़ात के दौरान हुज़ूर से कहा कि हुज़ूर हमारे देश के लिए आपकी दुआएं क़बूल हो रही हैं। हुज़ूर ने अपने पिछले दौरा के दौरान फ़रमाया था कि घाना की ज़मीन में तेल है और यहां से तेल निकलेगा। हुज़ूर की यह दुआ बड़ी शान से क़बूल हुई और पिछले वर्ष घाना से तेल निकल आया। इसलिए इस हवाले से घाना के मशहूर नैशनल अख़बार daily graphic ने अपने 17 अप्रैल 2008 के शुमारे में पहले पृष्ठ पर हुज़ूर अनवर और सदर गाना की मुलाक़ात की रिपोर्ट प्रकाशित करते हुए लिखा कि ख़लीफ़तुल मसीह ने अपने दौरा गाना 2004 के दौरान घाना में तेल की दरयाफ़त पर बड़े प्रभावी भाषण से अपने यक़ीन का इज़हार किया था और यही यक़ीन पिछले साल हक़ीक़त में बदल गया और घाना की सरज़मीन से तेल निकल आया।

(उद्धरित रोज़नामा अल् फ़ज़ल दुआ नंबर 28 दिसंबर 2015 ई.)

प्रिय सज्जनों! ख़ाकसार ने वक़्त की रियाइत से दुआ की स्वीकृति की केवल कुछ घटनाएँ बतौर मिसाल वर्णन कीं हैं अन्यथा इस ताल्लुक़ से बेशुमार ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात हैं कि जिन से एक ज़ख़ीम किताब तैयार हो सकती है। अतः दुआ की स्वीकृति के वाक़ियात वास्तव में हस्ती बारी तआला के वजूद पर स्वयं गवाह हैं और उसके ज़हूर के लिए तक़्वा, आन्तरिक पवित्रता, आजिज़ी और विनम्रता की आवश्यकता है जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि :-

कोई उस पाक से जो दिल लगावे
करे पाक आपको, तब उसको पावे
जो ख़ाक में मिले उसे मिलता है आश्ना
हे आज़माने वाले यह नुस्ख़ा भी आज़मा

इसी तरह आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"हम दुआ के माध्यम से समय से पूर्व ख़ुदा तआला से ज्ञान पाते हैं और ऐसा यक़ीन बढ़ता है कि मानो हम अपने ख़ुदा को देख लेते हैं यही दुआ है जिससे ख़ुदा पहचाना जाता है और उस प्रतापी की हस्ती का पता लगता है जो हज़ारों पर्दों में मख़फ़ी है।"

(अय्यामुस सुलह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 238)

وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين

★ ★ ★

जीवनी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुरआन-ए-मजीद से आप का प्रेम और ख़िदमत-ए-क़ुरआन

अता इलाही अहसन ग़ौरी, नाज़िम तमीरात सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

भाषण जल्सा सालाना क़ादियान 2021

काबिल-ए-एहतिराम सदर-ए-मज्लिस और सम्मानित श्रोताओं!

आज की इस बाबरकत मज्लिस में विनीत के भाषण का विषय है "सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुरआन-ए-मजीद से आपका प्रेम और ख़िदमत-ए-क़ुरआन"

धर्मों के इतिहास में 19वीं सदी का अंत और 20वीं सदी ईसवी का आरम्भ विशेषता महत्व रखता है। यह वह समय है, जबकि भारत में एक तरफ़ तो बड़े बड़े धर्मों के मध्य, गहरी गम्भीरता और लगाव के साथ नज़रियाती जंग लड़ी जा रही थी और दूसरी तरफ़, नए ज्ञान और नई सभ्यता के परिणाम में मज़हबी और ग़ैर मज़हबी नज़रियात बड़े ज़ोर से लड़ रहे थे। एक तरफ़ ईसाइयत,ब्राह्मो समाज, आर्या समाज के इस्लाम पर हमले थे। तो दूसरी तरफ़ मुसलमानों का यह हाल था कि उनके अधिकतर उल्मा को, इन बैरूनी ख़तरों से कोई लेना देना नहीं था, और वे अंदरूनी आपसी फ़िर्क़ों के झगड़ों को ही अपनी निजात का माध्यम समझ बैठे थे। उनके नज़दीक इस्लाम की चारदीवारी में, अंदरूनी लहरों के आपस में टकरा टकरा कर, झाग होते रहने का नाम ही जिहाद था। गिरेबानों में उलझे हुए इस गिरोह के अतिरिक्त, एक ख़ुदा के मार्ग में जान क़ुर्बान करने का दावा करने वाले उल्मा ऐसे भी थे, जो निकाह और फ़ातिहा ख़ानियों की मिठाईयां और यूसुफ़ ज़ुलेख़ा और मलिका सबह के क़िस्सों, तथा जिन्नात पर विजय के दावों से, देहात के माहौल को रंगीनियाँ अता कर रहा था। इस्लाम और क़ुरआन पर क्या बीत रही थी और हमारे आका और मौला हज़रत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कैसे कैसे ज़ालिमाना और झूठे हमले हो रहे थे इन बातों की तो उनके जिन्नात को भी ख़बर नहीं थी जिनका बनावटी उपहास करने में वे हर समय वयस्त थे।

इस्लाम के लिए फ़िकरों और दुखों और परेशानियों का यह वह समय था जिस में अहमदियत का नूर उदय हुआ। क़ादियान की इसी मुक़द्दस बस्ती में इस ज़माना का एक महान मुस्लेह पैदा हुआ जिसने इस छोटे से और ग़ैर इलमी माहौल में ज़िंदगी की चालीस बहारें अपने दादा और पिता के घर की एक कोठड़ी ,या छोटी सी मस्जिद के एक कोने में, ख़ामोशी और गहरी सोच और फ़िक्र-ओ-तदब्बुर और अध्यन में गुज़ार दी। उसने देखा कि इस्लाम का प्रतापी चेहरा जिसके रुहानी निशानों से तेराह सौ वर्ष पूर्व एक संसार जगमगा उठा था। उसके सीने में दर्द की टीस उठ उठ कर बाहर निकलने के लिए रास्ता तलाश करने लगी परन्तु उसने दर्द को दबा लिया और अंत वे सारा दर्द एकत्र हो कर शुद्ध पानी का रूप धारण कर गया और कागज़ के पृष्ठों पर बिखर कर उसने बराहीन-ए-अहमदिया की शक्ल इख़्तियार कर ली।

बराहीन-ए-अहमदिया क्या थी? एक सूरत इस्माफ़ील थी जिसने मज़हबी दुनिया में तहलका मचा दिया। भारत के कोने कोने में मुद्दतों से स्वप्न में डूबे मुसलमानों ने अंगड़ाइयाँ लेनी शुरू कर दीं और सरगोशियाँ होने लगीं कि बाग़-ए- मुहम्मद में कोई पुष्प खिला है। बराहीन-ए-अहमदिया के प्रकाशन पर मुसलमानों ने ख़ुशियां और ईदें मनाई। प्रत्येक तरफ़ से बधाई और प्रेम का भेंट आने लगा। किसी ने लिखा कि पिछली तेराह सदियों में इस्लाम की इतनी बड़ी ख़िदमत किसी ने नहीं की जितनी बराहीन-ए-अहमदिया के लेखक ने की। किसी ने प्रार्थना की कि तुम मसीहा बनो ख़ुदा के लिए। उद्देश्य बराहीन-ए-अहमदिया जो क़ुरआन के तर्कों पर आधारित मुसलमानों के एक इलमी हलक़ों में बेहद प्रिय हुई। परन्तु इस्लाम के दुश्मनों के घरों में मातम पड़ गया।

प्रिय श्रोताओं! यह वही फ़ारस का व्यक्ति था जिसके सम्बन्ध में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी थी कि لَوْ كَانَ الْإِيمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَنَالَهُ رِجَالٌ أَوْ رَجُلٌ مِنْ هَؤُلَاءِ

(बुख़ारी, किताबुल तफ़सीर सूरत जुम्मा और मुस्लिम)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "हदीसों में यह उल्लेखित है कि आख़िरी ज़माना में क़ुरआन ज़मीन से उठा लिया जाएगा और क़ुरआन क़ा ज्ञान खत्म हो जाएगा और जहालत फैल जाएगी और ईमान और प्रेम दिलों से दूर हो जाएगा। फिर इन हदीसों में यह हदीस भी है कि यदि ईमान सुरय्या के पास जा ठहरेगा अर्थात ज़मीन पर उसका नाम-ओ-निशान नहीं रहेगा तो एक आदमी फ़ारसियों में से अपना हाथ फैलाएगा और वहीं सुरय्या के पास से उसको ले लेगा अब तुम स्वयं समझ सकते हो कि इस हदीस से साफ़ मालूम होता है कि जब जहालत और बेईमानी और ज़लालत जो दूसरी हदीसों में दुख़ान के साथ ताबीर की गई है दुनिया में फैल जाएगी और ज़मीन में हक़ीक़ी ईमानदारी ऐसी कम हो जाएगी कि मानो वह आसमान पर उठ गई होगी और क़ुरआन-ए-करीम इस प्रकार छोड़ दिया जाएगा कि मानो वह ख़ुदा-ए-तआला की तरफ़ उठाया गया होगा।"

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 455)

फ़रमाया : "जब यह हाल होगा तो फ़ारस के लोगों में से एक व्यक्ति आएगा और वह दीन को पुनः वापस लाएगा और दीन को और क़ुरआन को पुनः ताज़ा करेगा। क़ुरआन की खोई हुई प्रतिष्ठा और भूली हुई हिदायत और सुरय्या पर गया हुआ ईमान दुबारा दुनिया में फैलाए गा।"

क़ुरआन का सेवक होने के कारण, अपने आने का उद्देश्य वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"ख़ुदा तआला ने मुझे अवतरित फ़रमाया कि मैं इन मदफ़ूना ख़ज़ायन को दुनिया पर ज़ाहिर करूँ और नापाक आरोपों का कीचड़ जो इन चमके हुए जवाहरात पर थोपा गया है, उससे उनको पवित्र करूँगा। ख़ुदा तआला की ग़ैरत उस वक़्त बड़ी जोश में है कि क़ुरआन शरीफ़ के सम्मान को प्रत्येक ख़बीस दुश्मन के आरोप से पवित्र करूं।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 38 मुद्रित क़ादियान 2003 ई.)

अल्लाह तआला की तरफ़ से दिया हुआ क़ुरआन हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ के माध्यम से एक तरफ़ जहां आपने अन्य धर्मों के अक़ायद मसीह के जीवित होने, तस्लीस, मसीह के पुत्र, कफ़्फ़ारा, तनासुख़, पुरातन रूह और शरीर, इत्यादि का रद्द फ़रमाया वहीं मुसलमानों की झूठे मतों की इस्लाह करते हुए वफ़ाते मसीह, इजराए नबुव्वत, अस्मते अम्बिया, नुज़ूल-ए-मसीह इत्यादि विषयों पर क़ुरआन के तर्कों से रोशनी डाली। तथा मुसलमानों में फैली हुई बद रस्मों का भी क़ुरआन-ए-मजीद की हक़ीक़ी तालीम की रोशनी में बहैसीयत हकम और अदल अंत किया। अल्लाह तआला ने आप को क़ुरआन मजीद के ज़िल के तौर पर फ़सीह

और बलीग़ अरबी भाषा सिखाई जिसके परिणाम में आपने बीस के क़रीब अरबी पुस्तकें लिखीं जिन में से एक किताब "एजाज़-ए-मसीह" भी है जो सूरत फ़ातेहा की तफ़सीर पर आधारित है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस तफ़सीर के सम्बन्ध में ख़ुदा से ज्ञान पा कर लिखा है कि

"यदि मुख़ालिफ़ उलमा और शोधकर्ता और फ़ुक़हा और उनके बाप और बेटे सहमत हो कर इस तफ़सीर का उदाहरण लाना चाहें तो वे कदापि नहीं ला सकेंगे"

(एजाज़ुल मसीह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 18 पृष्ठ 56 मफ़हूमन)

इस महान भविष्यवाणी के अनुसार अरब और अजम के किसी भी लेख और शोधकर्ता को इस की उदाहरण लिखने का साहस नहीं हुआ। आपने अपनी अस्सी से अधिक पुस्तकों में क़ुरआन-ए-मजीद के ऐसे हक़ायक़ और मआरिफ़ और रहस्य और मत वर्णन फ़रमाएं जिनका अन्य तफ़ासीरों में नाम-ओ-निशान नहीं मिलता।

आप फ़रमाते हैं : "मैं इससे पहले लिख चुका हूँ कि क़ुरआन शरीफ़ के रहस्य अधिकतर इल्हाम के माध्यम से मेरे पर खुलते रहते हैं और अक्सर ऐसे होते हैं कि तफ़सीरों में उनका नाम-ओ-निशान नहीं पाया जाता। उदाहरणतः यह जो इस विनीत पर खुला है कि आदम के जन्म से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का समय आने तक, मुद्दत गुज़री थी वे समस्त समय सूरत अल् असर के शब्दों की संख्या में क़मरी के हिसाब से वर्णित है अर्थात चार हज़ार सात सौ चालीस। अब बताओं कि ये क़ुरआन के रहस्य जिसमें क़ुरआन करीम का चमत्कार स्पष्ट है किस तफ़सीर में हैं।"

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 258)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने से पूर्व मुसलमानों में क़ुरआन-ए-मजीद के सम्बन्ध में यह धारणा पाई जाती थी कि क़ुरआन शरीफ़ की कुछ आयात हटाने योग्य हैं और कुछ व्यर्थ हैं। मंसूख आयात की संख्यां उल्मा के नज़दीक पाँच सौ तक थी। जबकि कि उलमा ने यह कोशिश की कि किसी तरह जोड़ समझ करके इस संख्यां को कम किया जाए और वे अपनी इस कोशिश में सफ़ल भी हुए, लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने से पूर्व तक भी, इस धारणा का पूरी तरह से हल नहीं हो पाया था और पाँच आयात ऐसी रह गई थीं जो उलमा के नज़दीक निरस्त थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आ कर इस मसले को पूरी तरह से हल फ़र्मा दिया। इसलिए आप फ़रमाते हैं :

"हम पूर्ण विश्वास के साथ इस बात पर ईमान रखते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ आकाशीय खातमुल पुस्तक है, और एक बिंदु या शब्द उसके सिद्धांत और हदूद और अहकाम और आदेश से ज़्यादा नहीं हो सकते और न कम हो सकते हैं और अब कोई ऐसी वह्यी या ऐसा इल्हाम ख़ुदा की ओर से नहीं हो सकता जो क़ुरआन के आदेश का बदलाव या खण्डन या किसी एक आदेश के तबदीली या परिवर्तन कर सकता हो। यदि कोई ऐसा ख़्याल करे तो वह हमारे नज़दीक मोमेनीन की जमाअत से बाहर और नास्तिक और काफ़िर है।" (ईज़ाला औहाम, प्रथम, पृष्ठ 170)

हज़रत मियां अब्दुल्लाह सनोरी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की एक लंबी रिवायत है। वह कहते हैं :-

"मैंने एक दफ़ा हज़रत साहब से अर्ज़ किया कि हुज़ूर मैं जब क़ादियान आता हूँ तो और तो कोई ख़ास बात महसूस नहीं होती परन्तु मैं यह देखता हूँ कि यहां समय समय पर एक साथ मुझ पर कुछ क़ुरआन की आयतों के अर्थ खोले जाते हैं और मैं इस तरह महसूस करता हूँ कि मानो मेरे दिल पर अर्थों की एक पोटली बंधी हुई गिरा दी जाती है। हज़रत साहिब ने फ़रमाया कि हमें क़ुरआन शरीफ़ के मआरिफ़ दे कर ही अवतरित किया गया है और इसी की ख़िदमत हमारा फ़र्ज़ निर्धारित किया गया है। अतः हमारी सोहबत का भी यही लाभ होना चाहिए।" (सीरतुल महदी, भाग प्रथम, पृष्ठ 90)

अब मैं आपके सामने हुज़ूर अलैहिस्सलाम की जीवनी के क़ुरआन के प्रेम के पहलू पर कुछ रोशनी डालूँगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनि पवित्र वाणी में फ़रमाते हैं :

दिल में यही है हर-दम तेरा सहीफ़ा चूमूं
क़ुरआँ के गिर्द घूमूं काबा मेरा यही है

हुज़ूर अलैहिस्सलाम को क़ुरआन-ए-मजीद के कलाम-ए-इलाही होने की वजह से इस से सच्ची और फ़िल्ली मुहब्बत थी और इसके बेनज़ीर अर्थों और भौतिक सुंदरता की वजह से आपको इससे बे हद प्रेम था। जैसा कि इस कविता से ज़ाहिर हैं जैसा कि आप फ़रमाते हैं कि हे मेरे आसमानी आक़ा तेरी तरफ़ से आया हुआ यह पवित्र ग्रन्थ है जिसे बार-बार चूमने और उसके गिर्द तवाफ़ करने के लिए मेरा दिल बेचैन रहता है। आप अलैहिस्सलाम क़ुरआन-ए-मजीद के बेनज़ीर अर्थों और ज़ाहिरी सुन्दरता का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"निसंदेह समझो कि जिस तरह यह संभव नहीं कि हम बग़ैर आँखों के देख सकें या बग़ैर कानों के सुन सकें या बग़ैर भाषा के बोल सकें ईसी तरह यह भी संभव नहीं कि बग़ैर क़ुरआन के उस के प्यारे महबूब का मुँह देख सकें। मैं जवान था अब बूढ़ा हुआ परन्तु मैंने कोई न पाया जिसने इस पाक चशमा के बग़ैर इस खुली खुली मार्फ़त का पियाला पिया हो।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 10 पृष्ठ 442)

आप लेखनी कशती नूह में क़ुरआन-ए-मजीद को तदब्बुर से पढ़ने और इस से बे-इंतिहा मुहब्बत करने और उसके समस्त आदेशों पर जान लुटाने पर अमल करने के बारे में फ़रमाते हैं :

"मैं तुम्हें सच्च सच्च कहता हूँ कि जो व्यक्ति क़ुरआन के सात सौ आदेश में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह निजात का दरवाज़ा अपने हाथ से अपने पर बंद करता है। हक़ीक़ी और कामिल निजात की राहें, क़ुरआन ने खोलीं और बाक़ी सब उसके ज़िल थे। अतः तुम क़ुरआन को तदब्बुर से पढ़ो और इससे बहुत ही प्यार करो ऐसा प्यार कि तुमने किसी से न क्या हो क्योंकि जैसा कि ख़ुदा ने मुझे संबोधित करके फ़रमाया कि اَلْخَيْرُ كُلُّهُ فِي الْقُرْآن कि समस्त किस्म की भलाइयां क़ुरआन में हैं। यही बात सच्च है। अफ़सोस उन लोगों पर जो किसी और चीज़ को इस पर प्राथमिकता देते हैं। तुम्हारी समस्त सफ़लता और निजात का स्रोत क़ुरआन में है। कोई भी तुम्हारी ऐसी धार्मिक आवश्यकता नहीं जो क़ुरआन में नहीं पाई जाती। तुम्हारे ईमान का सत्यापन करने वाला या झुठलाने वाला क़ियामत के दिन क़ुरआन है और क़ुरआन के अतिरिक्त आसमान के नीचे और कोई किताब नहीं जो सीधे तुम्हें हिदायत दे सके। ख़ुदा ने तुम पर बहुत एहसान किया है जो क़ुरआन जैसी किताब तुम्हें प्रदान की। मैं तुम्हें सच्च सच्च कहता हूँ कि वह किताब जो तुम पर पढ़ी गई यदि ईसाइयों पर पढ़ी जाती तो वे हलाक न होते और यह नेअमत और हिदायत जो तुम्हें दी गई यदि बजाय तौरेत के यहूदियों को दी जाती तो कुछ फ़िरक़े उनके क़ियामत से इंकार करने वाले नहीं होते। अतः इस नेअमत की क़दर करो जो तुम्हें दी गई। यह निहायत प्यारी नेअमत है। यह बड़ी दौलत है। यदि क़ुरआन नहीं आता तो समस्त दुनिया एक गंदे मास के टुकड़े की तरह थी। क़ुरआन वह किताब है जिसके मुक़ाबिल पर समस्त हिदायतें छोटी हैं।" (कुश्ती-ए-नूह , रुहानी ख़ज़ायन भाग 19, पृष्ठ 26 - 27)

आप की पुस्तकें और मल्फ़ूज़ात के अध्यन से मालूम होता है कि आप न केवल स्वयं क़ुरआन-ए-मजीद का कसरत से अध्यन करते थे बल्कि दूसरों को भी बार बार क़ुरआन मजीद पढ़ने पढ़ाने, सुनने सुनाने का आदेश फ़रमाते रहते थे। एक दफ़ा का वर्णन है कि एक व्यक्ति ने प्रश्न किया कि हुज़ूर क़ुरआन शरीफ़ किस तरह पढ़ा जाए इस पर आप

अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"क़ुरआन शरीफ़ सोच समझ कर ध्यान से पढ़ना चाहिए। हदीस शरीफ़ में आया है-رُبَّ قَارِءٍ يَلْعَنُهُ الْقُرْآنُ अर्थात बहुत ऐसे क़ुरआन-ए-करीम के क़ारी होते हैं जिन पर क़ुरआन-ए-करीम लानत भेजता है। जो व्यक्ति क़ुरआन पढ़ता और उस पर अमल नहीं करता उस पर क़ुरआन-ए-मजीद लानत भेजता है। तिलावत करते वक़्त जब क़ुरआन-ए-करीम की आयत-ए-रहमत पर गुज़र हो तो वहां ख़ुदा तआला से रहमत मांगी जाए और जहां किसी क़ौम के दंड का वर्णन हो तो वहां ख़ुदा तआला के दंड से ख़ुदा के आगे पनाह का निवेदन किया जाए और तदब्बुर-ओ-ग़ौर से पढ़ना चाहिए और इस पर अमल किया जाए।

(मल्फ़ूज़ात, भाग पंजुम, पृष्ठ 157)

फिर फ़रमाते हैं "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि क़ुरआन शरीफ़ ग़म की हालत में नाज़िल हुआ है। तुम भी उसे ग़म ही की हालत में पढ़ा करो।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3, पृष्ठ 152)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत को कसरत से क़ुरआन-ए-मजीद पढ़ने पढ़ाने के सम्बन्ध में तलक़ीन करते हुए फ़रमाते हैं :

"अब सब किताबें छोड़ दो और रात-दिन किताबुल्लाह ही को पढ़ो। बड़ा बेईमान है वह व्यक्ति जो क़ुरआन-ए-करीम की तरफ़ प्रेम न करे और दूसरी किताबों पर ही रात-दिन झुका रहे। हमारी जमाअत को चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम के शुग़ल और तदब्बुर में जान और दिल से वयस्त हो जाएं और हदीसों के शुग़ल को तर्क करें। बड़े अफ़सोस का स्थान है कि क़ुरआन-ए-करीम का वह सम्मान नहीं किया जाता जो अहादीस का किया जाता है। इस वक़्त क़ुरआन-ए-करीम का हर्बा हाथ में लो तो तुम्हारी फ़तह है। उस नूर के आगे कोई ज़ुल्मत ठहर नहीं सकेगी।

(मल्फ़ूज़ात, भाग अव्वल, पृष्ठ 386)

एक व्यक्ति ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मेरे वास्ते दुआ की जाए कि मेरी ज़बान क़ुरआन शरीफ़ अच्छी तरह अदा करने लगे। मेरी ज़बान क़ुरआन शरीफ़ अदा करने के योग्य नहीं और चलती नहीं। मेरी ज़बान खुल जाए। फ़रमाया :

"तुम सब्र से क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते जाओ अल्लाह तआला तुम्हारी ज़बान को खोल देगा। क़ुरआन शरीफ़ में यह एक बरकत है कि इससे इन्सान का ज़हन साफ़ होता है और ज़बान खुल जाती है बल्कि चिकित्स भी इस बीमारी का अक्सर यह ईलाज बताया करते हैं।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 3, पृष्ठ 105)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम को क़रीब से देखने वाले और आप के साथ मिलने जुलने वाले इस बात के गवाह हैं कि आपको क़ुरआन-ए-मजीद से बे-इंतिहा इशक़ और उसके अध्यन का लगाव था। कुछ एक वाक़ियात पेश करता हूँ जिनसे आपके क़ुरआन-ए-मजीद से बे इंतिहा इशक़ का बख़ूबी अनुमान लगाया जा सकता है।

"मिर्ज़ा दीन मोहम्मद साहिब लंगर वाल ज़िला गुरदासपुर के रहने वाले ने लिखित रूप में मुझ से वर्णन किया कि मैं अपने बचपन से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखता आया हूँ और सबसे पहले मैंने आपको मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब की ज़िंदगी में देखा था। जबकि मैं बिल्कुल बच्चा था। आपकी आदत थी कि रात को इशा के बाद जल्दी सौ जाते थे और फिर एक बजे के क़रीब तहज्जुद के लिए उठ खड़े होते थे और तहज्जुद पढ़ कर क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत फ़रमाते रहते थे। फिर जब सुबह की अज़ान होती तो सुन्नतें घर में पढ़ कर नमाज़ के लिए मस्जिद में जाते और बाजमाअत नमाज़ पढ़ते।"

(सीरतुल महदी, भाग 3, पृष्ठ 513 - 514)

ईसी तरह हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया है कि "पिता साहिब तीन किताबें बहुत कसरत के साथ पढ़ा करते थे अर्थात क़ुरआन-ए-मजीद, मसनवी रूमी और दलायल अलख़ैरात, और कुछ नोट भी लिया करते थे और क़ुरआन शरीफ़ बहुत कसरत से पढ़ा करते थे।"

(सीरतुल महदी, भाग प्रथम, पृष्ठ 199)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दावा से पूर्व नोकरी के सिलसिले में सियालकोट में रहते थे उस वक़्त के हालात वर्णन करते हुए आदरणीय मौलवी मीर हसन साहिब सियालकोटी वर्णन करते हैं कि :

"हज़रत मिर्ज़ा साहिब पहले मुहल्ला कश्मीरियाँ में जो इस विनीत के घर के बहुत क़रीब है, उमरा नामी कश्मीरी के मकान पर किराए पर रहा करते थे। कचहरी से जब तशरीफ़ लाते थे तो क़ुरआन-ए-मजीद की तिलावत में वयस्त होते थे। बैठ कर खड़े हो कर, टहलते हुए तिलावत करते थे और लगातार रोया करते थे। ऐसी विनम्रता और सादगी से तिलावत करते थे कि इसका उदाहरण नहीं मिलता।"

(सीरतुल महदी, भाग प्रथम, पृष्ठ 252)

ईसी तरह हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन है कि :

"मुंशी अब्दुल वाहिद साहिब एक ज़माना में बटाला में तहसीलदार होते थे। मुंशी अब्दुल वाहिद साहिब बटाला से अक्सर बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पिता हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब को मिलने के लिए जाया करते थे और वह वर्णन करते थे कि उस वक़्त हज़रत साहिब की आयु चौदह पंद्रह वर्ष की होगी और वर्णन करते थे कि इस आयु में हज़रत साहिब सारा दिन क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते रहते और हाशिया पर नोट लिखते रहते थे और मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब हज़रत साहिब के सम्बन्ध में अक्सर फ़रमाते थे कि मेरा यह बेटा किसी से मतलब नहीं रखता। सारा दिन मस्जिद में रहता है और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता रहता है। मुंशी अब्दुल वाहिद साहिब क़ादियान बहुत दफ़ा आते-जाते थे। उनका वर्णन था कि मैंने हज़रत साहिब को हमेशा क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते देखा है।"

(सीरतुल महदी, भाग 4, पृष्ठ 26 रिवायत 1011)

मियां फ़ख़रुद्दीन साहिब मुल्तानी का वर्णन है कि :

"जब 1907 ई. में हज़रत पत्नी साहिबा लाहौर तशरीफ़ ले गईं तो उनकी वापसी की सूचना आने पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उनको लाने के लिए बटाला तक तशरीफ़ ले गए हज़रत साहिब पालकी में बैठ कर रवाना हुए जिसे आठ व्यक्ति बारी बारी उठाते थे। क़ादियान से निकलते ही हज़रत साहिब ने क़ुरआन शरीफ़ खोल कर अपने सामने रख

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

लिया और सूरः फ़ातिहा की तिलावत शुरू फ़रमाई और मैं ग़ौर के साथ देखता गया कि बटाला तक हज़रत साहिब सूरः फ़ातिहा ही पढ़ते चले गए और दूसरा पृष्ठ नहीं उलटा। रास्ता में एक दफ़ा नहर पर हज़रत साहिब ने उतर कर मूत्र किया और फिर वुज़ू करके पालकी में बैठ गए और इसके बाद फिर इसी तरह सूरत फ़ातिहा की तिलावत में वयस्त हो गए।"

(सीरतुल महदी, भाग 2, पृष्ठ 395)

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन है कि :

"मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को केवल एक दफ़ा रोते हुए देखा है और वह इस तरह कि एक दफ़ा आप ख़ुद्दाम के साथ सैर के लिए तशरीफ़ ले जा रहे थे और उन दिनों में हाजी हबीबुल्लाह रहमान साहिब हाजीपूरा वालों के दामाद क़ादियान आए हुए थे। किसी व्यक्ति ने हज़रत साहिब से अर्ज़ किया कि हुज़ूर यह क़ुरआन शरीफ़ बहुत अच्छा पढ़ते हैं। हज़रत साहिब वहीं रास्ते के एक तरफ़ बैठ गए और फ़रमाया कि कुछ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर सुनाएँ। इसलिए उन्होंने क़ुरआन शरीफ़ सुनाया तो उस वक़्त मैंने देखा कि आपकी आँखों में आँसू भर आए थे।"

(सीरतुल महदी, हिस्सा 2, पृष्ठ 393)

ये कुछ वाक़ियात उदाहरण के रूप में विनीत ने पेश किए हैं, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़ुरआन के आशिक़ होने पर गवाह हैं। आप अलैहिस्सलाम न केवल स्वयं क़ुरआन-ए-मजीद से बे-इंतिहा मुहब्बत करते थे, और इसकी तिलावत में दिन रात व्यस्त रहते थे बल्कि दूसरों को भी, वशेषता अपने अनुयाइयों को क़ुरआन-ए-मजीद से बे इंतिहा मुहब्बत करने और कसरत से उसका अध्यन करने और उसके आदेशों पर अमल करने का आदेश फ़रमाया करते थे।

आप क़ुरआन-ए-मजीद की प्रतिष्ठा और उसकी महान विशेषताओं का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया और यदि लोग चाहें तो गवाही दे सकते हैं कि मैं दुनिया-दारी के कामों में नहीं पड़ा और दीनी शुग़ल में हमेशा मेरी दिलचस्पी रही। मैंने इस कलाम को जिस का नाम क़ुरआन है निहायत दर्जा तक पाक और रुहानी हिक्मत से भरा हुआ पाया। न वह किसी इन्सान को ख़ुदा बनाता और न रूहों और जिस्मों को इस की पैदाइश से बाहर रख कर उसका अपमना और निंदा करता है और वह बरकत जिस के लिए धर्म स्वीकार किया जाता है उसको यह कलाम अंततः इन्सान के दिल पर वारिद कर देता है और ख़ुदा के फ़ज़ल का उसको मालिक बना देता है। अतः क्यूँ-कर हम रोशनी पाकर फिर अंधकार में आएं और आँखें पाकर फिर अंधे हो जाएँ।"

(सनातन धर्म, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 474)

जहां तक क़ुरआन-ए-मजीद का सम्मान करने का सम्बन्ध है इस बारे में तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कोई अद्वितीय नहीं है। आप क़ुरआन-ए-मजीद का इस क़दर सम्मान करते थे कि एक लम्हा के लिए भी क़ुरआन-ए-मजीद का अपमान सहन नहीं कर सकते थे। इस सम्बन्ध में एक रिवायत आती है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन हैं :

"हज़रत माता साहिबा ने मुझ से वर्णन किया कि एक दफ़ा तुम्हारे भाई मुबारक अहमद मरहूम से बचपन की बेपर्वाई में क़ुरआन शरीफ़ की कोई बे-हुरमती हो गई, इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इतना ग़ुस्सा आया कि आपका चेहरा लाल हो गया और आपने बड़े ग़ुस्से में मुबारक अहमद के मुख पर एक तमाचा मारा जिससे उसके नाज़ुक बदन पर आपकी उंगलियों का निशान उठ आया और आपने इस ग़ुस्सा की हालत में फ़रमाया कि इसको इस वक़्त मेरे सामने से ले जाओ (हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं) कि मुबारक अहमद मरहूम हम सब भाईयों में से आयु में छोटा था और हज़रत साहिब की ज़िंदगी में ही फ़ौत हो गया था। हज़रत साहिब को उससे बहुत मुहब्बत थी, इसलिए उसकी वफ़ात पर जो कविता आपने कत्बे पर लिखी जाने के लिए कही उसका एक शेअर यह है :

जिगर का टुकड़ा मुबारक अहमद जो पाक शक्ल और पाक ख़ू था
वह आज हम से जुदा हुआ है हमारे दिल को हज़ीं बना कर

मुबारक अहमद बहुत नेक सीरत बचा था। और वफ़ात के वक़्त उसकी आयु केवल कुछ ऊपर आठ वर्ष की थी। लेकिन हज़रत साहिब ने क़ुरआन शरीफ़ की बे-हुरमती देख कर उसकी इस्लाह ज़रूरी समझी।"

(सीरतुल महदी, भाग 2, पृष्ठ 301 से 302)

अतः ये वे कुछ वाक़ियात हैं जिनसे हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का क़ुरआन मजीद से इशक़, अत्यधिक अध्यन का शौक़, क़ुरआन-ए-मजीद का सम्मान और उसके सम्बन्ध में ग़ैरत जो आपके दिल में भरी हुई थी का अनुमान होता है। आप अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं :

"तुम्हारे लिए एक आवश्यक शिक्षा यह है कि क़ुरआन शरीफ़ को महजूर की तरह न छोड़ दो कि तुम्हारी इसी में ज़िंदगी है। जो लोग क़ुरआन को इज़्ज़त देंगे वे आसमान पर इज़्ज़त पाएँगे। जो लोग प्रत्येक हदीस और प्रत्येक कथन पर क़ुरआन को प्रथम रखेंगे उनको आसमान पर प्रथम रखा जाएगा। मानवजाति के लिए समस्त ज़मीन पर अब कोई किताब नहीं परन्तु क़ुरआन और समस्त मनुष्यों के लिए अब कोई रसूल और शफ़ी नहीं परन्तु मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। अतः तुम कोशिश करो कि सच्ची मुहब्बत इस प्रतापी नबी के साथ रखो और उसके ग़ैर को इस पर किसी प्रकार की बड़ाई मत दो ताकि आसमान पर तुम निजात याफताह लिखे जाओ।"

(कुश्ती-ए- नूह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 13)

सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इन आदेशों की रोशनी में हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

" अत: हम में से प्रत्येक को अपना जायज़ा लेना चाहिए कि वे किस हद तक क़ुरआन से मुहब्बत करता है, उसके आदेशों को मानता है और उन पर अमल करने की कोशिश करता है। मुहब्बत के इज़हार के भी तरीक़े होते हैं। सबसे ज़्यादा आवश्यक चीज़ जो प्रत्येक अहमदी को अपने ऊपर फ़र्ज़ कर लेनी चाहिए वह यह है कि नियमित रूप से कम से कम दो तीन रुकू अवश्य तिलावत करे। फिर अगले क़दम पर अनुवाद पढ़े और प्रतिदिन तिलावत के साथ अनुवाद पढ़ने से आहिस्ता-आहिस्ता यह सुन्दर तालीम बिना महसूस हुए दिमाग़ में बैठनी शुरू हो जाती है।"

(शरायते बैअत और अहमदी की ज़िम्मेदारियाँ, पृष्ठ 12 से 13)

दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन-ए-मजीद से बे-इंतिहा मुहब्बत करने, दिन रात उसकी तिलावत करने और उसके आदेशों पर अमल करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई (जमाअत अहमदिया की प्रगति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों के आलोक में)

(मुनीर अहमद ख़ादिम,ऐडीशनल नाज़िर इस्लाह वारशाद दक्षिण हिंद)

भाषण जल्सा सालाना क़ादियान 2021

काबिल-ए-एहतिराम सदर-ए-इजलास और सम्मानित श्रोताओं!

विनीत की तक़रीर का शीर्षक है "जमाअत अहमदिया की प्रगति हज़रत मसीह मौऊद की भविष्यवाणियों की रोशनी में"

यह इलाही सुन्नत है कि जब भी अल्लाह-तआला किसी अवतार रसूल को भेजता है तो उसका आना अत्यधिक कमज़ोरी बेकसी की हालत में होता है वह और उसके मानने वाले अपने रुहानी यात्रा का आरम्भ निहायत उत्पीड़न की हालत में करते हैं। दुनिया उनको सताती है तंग करती है और इस दुनिया में उनका जीना कठिन कर देती है चारों तरफ़ से उन पर मज़ालिम की बारिशें बरसाई जाती हैं उपहास किया जाता है ताने कसे जाते हैं और अनादर किया जाता है और वह केवल और केवल अपने भेजने वाले के नाम को बुलंद करने के लिए उसके सहारे पर अपने मिशन को आगे बढ़ाता चला जाता है अल्लाह उसका हाथ पकड़ लेता है उसको और उसके मानने वालों को हौसला देता है और उसकी सदाक़त के निशान के तौर पर फ़रमाता है घबराओ नहीं।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ○ كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ○

(अल् मुजादिलाह : 21-22)

कि वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला करते हैं वही ज़लील होंगे अल्लाह ने फ़र्ज़ कर छोड़ा है कि मैं और मेरे रसूल अवश्य विजय होंगे निसंदेह अल्लाह ग़ालिब और इज़्ज़त वाला है।

इसी तरह अपने मुर्सलीन को तसल्ली देते हुए फ़रमाता है कि

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ

(अल् साफ़ात : 172-174)

निसंदेह पहले भी हमारे भेजे हुए बंदों के सम्बन्ध में हमारी ये बात पूरी हो चुकी है कि वे निसंदेह निसंदेह सहायता दिए जाऐंगे और निसंदेह हमारा लश्कर ही ग़ालिब होने वाला है।

अतः समस्त अम्बिया निहायत कमज़ोरी की हालत में अवतरित होते हैं। फिर इन कमज़ोरों की सदाक़त की ये निशानी होती है कि وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ (अल् बक़रः : 46) कि दुश्मनों के ज़ुलम के मुक़ाबला में ख़ुदा से सब्र और दुआ के साथ सहयता माँगो।

फिर दुआ सिखाई कि

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

(अल् बक़रः : 251)

हे हमारे रब हम पर सब्र नाज़िल कर और हमारे क़दमों को मज़बूती प्रदान कर और काफ़िर क़ौम के ख़िलाफ़ हमारी सहायता फ़रमा। इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूर्व भी हज़रत-ए-आदम अलैहिस्सलाम से लेकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक इस इलाही सुन्नत पर अमल होता रहा और फिर इस्लाम की तारीख़ गवाह है कि किस तरह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा इंतिहाई मज़लूमी के समय से गुज़रे। वे मारे गए। घसीटे गए। बाईकॉट किए गए। समाज के हुक़ूक़ से वंचित कर दिए गए। घरों से बेघर किए गए। क़तल की धमकियां दी गईं और उनमें से कई शहीद भी कर दिए गए और यह सिलसिला शहादत का लगातार कई वर्षों तक चलता रहा और मुसलमान सब्र करते रहे और सब्र और दुआ से ख़ुदा की सहयता मांगते रहे और फिर इन मज़लूमों की शान यह रही कि अत्याचार सह कर और ज़ुल्मों की चक्कियों में पिस कर जब ख़ुदा उनको फ़तह अता फ़रमाता है तो ये अपने दुश्मनों को माफ़ फ़र्मा देते हैं और यही उनकी सच्चाई की एक बड़ी निशानी है।

प्रिय श्रोतागणों यही इलाही सुन्नत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम इस समय के मसीह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के पवित्र समय में भी जारी हुई। आप अलैहिस्सलाम के इस मुबारक समय की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले ही भविष्यवाणियां फ़र्मा दी थीं कि आपके समय का आरंभ भी उत्पीड़न से होगा और इमाम महदी व मसीह मौऊद के साथ उनके दौर के बुरे मुख़ालिफ़ीन वही व्यवहार करें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा के साथ उनके दौर के बदबख़त मुख़ालिफ़ीन ने किया था। इस सम्बन्ध में कायनात के सरदार वर्तमान के गौरव हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि बनी इस्राईल 72 फ़िर्क़ों में बट गए थे और मेरी उम्मत 73 फ़िर्क़ों में बट जाएगी जो सबके सब आग में होंगे सिवाए एक के लोगों ने पूछा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी क्या निशानी होगी फ़रमाया उनकी निशानी यह है कि उनका हाल वही होगा जो आरम्भिक समय में मेरा और मेरे सहाबा का हुआ है। मेरी और मेरे सहाबा की मुख़ालिफ़त हुई इसी तरह आने वाले मसीह मौऊद की और उसके सहाबा की मुख़ालिफ़त होगी। इसलिए अज़ीम सूफ़ी बुज़ुर्ग हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहमहुल्लाह ने लिखा है कि ذا خرج هذا الامام المهدى لم يكن له اعداء الا الفقهاء خاصة जब इमाम महदी अलैहिस्सलाम ज़ाहिर होंगे तो उसके ज़माने के फ़ुक़हा इसके पक्के दुश्मन बन जाऐंगे। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आरंभिक दौर में आपके रिश्तेदारों से लेकर क्षेत्र के लोगों और खासतौर पर मौलवियों ने जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी आपकी सख़्त मुख़ालिफ़त की।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रिश्तेदारों में आपके चचाज़ाद भाई मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन और मिर्ज़ा इमामुद्दीन आपके सख़्त मुख़ालिफ़ थे और कहा करते थे कि आपने नऊज़ो बिल्लाह दुकानदारी चला रखी है और कई दफ़ा किसी को निर्धारित कर देते थे जो सारी सारी रात आपके घर की तरफ़ मुँह करके ग़ालियां दिया करता था एक दफ़ा ऐसे ही एक व्यक्ति के सम्बन्ध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि समस्त रात ग़ालियां देता रहा है थक गया

होगा उसको खाने को कुछ भिजवा दो सुब्हानल्लाह अपने आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ग़ुलामी में आपके क्या अज़ीम अख़लाक़ थे। क़ादियान में आपके रिश्तेदारों के अतिरिक्त ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम लोग भी सख़्त मुख़ालिफ़त और दुश्मनी करते थे। एक दफ़ा हज़रत अहमद नूर काबुली साहिब ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर दुश्मन सख़्त तंग करते हैं ग़ालियां देते हैं आप हमें भी मुक़ाबला की आज्ञा दें। फ़रमाया नहीं सब्र करो और सब्र के दामन को मत छोड़ो और यदि सब्र नहीं होता तो फिर काबुल चले जाओ। आप के अपने रास्ता को दीवार लगा कर बंद कर दिया गया जिससे आप को और सहाबा को सख़्त तकलीफ़ हुई। मुक़द्दमा हुआ तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हक़ में फ़ैसला हुआ हुज़ूर को इख़तियार दिया गया कि आप उनसे हर्जाना वसूल कर सकते हैं लेकिन हुज़ूर ने माफ़ फ़र्मा दिया ये तो रिश्तेदारों का हाल था दूसरी तरफ़ मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने समस्त भारत में घूम कर 200 मौलवियों के फ़तवे हासिल किए कि नऊज़ूबिल्लाह हुज़ूर काफ़िर हैं दज्जाल हैं उनके पीछे नमाज़ नहीं हो सकती, सलाम कलाम नहीं हो सकता समाजी मुलाक़ात नाजायज़ हैं। इसके परिणाम में पूरे भारत में मुख़ालिफ़त का एक तूफ़ान खड़ा हो गया अहमदी मारे जाते उनकी जायदादों को लूट लिया जाता यहां तक कि कुछ को शहीद कर दिया गया जिनमें हज़रत मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब शहीद और हज़रत मौलाना अब्दुल लतीफ़ साहिब की शहादत अहमदियत के आसमान पर रोशन सितारों की तरह लिखी है। उधर मुख़ालिफ़त होती और इधर हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला जमाअती प्रगति की ख़बरें अता फ़रमाता आपको महान विजय की ख़ुशख़बरियाँ अता फ़रमाता। इसलिए अल्लाह तआला ने आपको बशारत देते हुए फ़रमाया :

"तू बल पूर्वक दबाया हुआ हो कर अर्थात बज़ाहिर मग़लूबों की तरह हक़ीर हो कर फिर ग़ालिब हो जाएगा और अंजाम तेरे लिए होगा और हम वे समस्त बोझ तुझसे उतार लेंगे जिस ने तेरी कमर तोड़ दी। ख़ुदा तआला का इरादा है कि तेरी तौहीद तेरी प्रतिष्ठा तेरी कमालियत फैला दे। ख़ुदा तआला तेरे चेहरे को ज़ाहिर करेगा और तेरे साया को लंबा कर देगा दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसे क़बूल नहीं किया लेकिन ख़ुदा उसे क़बूल करेगा और बड़े ज़ोर-आवर हमलों से उसकी सच्चाई ज़ाहिर कर देगा अनक़रीब उसे एक बड़ा देश दिया जाएगा ... और ख़ज़ायन उस पर खोले जाऐंगे ... मैं तुझे ज़मीन के किनारों तक इज़्ज़त के साथ शौहरत दूँगा ... हमने तुझ को मसीह इब्ने मरियम बनाया है।"

(तज़किरः, पृष्ठ 148 कम्पोज़ ऐडीशन)

प्रिय श्रोतागणों! इन महान भविष्यवाणियों के अनुसार विजय आसमानी का सिलसिला हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक दौर में ही शुरू हो चुका था। जबकि आपने 1884 में किताब बराहीन-ए-अहमदिया लिखी तो पूरे मुल्क में उसकी स्वीकृति और उसके माध्यम से इस्लाम की बुलंदी और शान के इज़हार की आवाज़ें उठने लगीं। मुख़ालिफ़ीन भी कह उठे कि किताब बराहीन-ए-अहमदिया के माध्यम से आपने इस्लाम की ऐसी अज़ीमुश्शान ख़िदमत सरअंजाम दी है जिसका उदाहरण पिछले 1400 वर्ष में नहीं मिलता फिर 1891 में जब आपने अल्लाह के आदेश और इल्हाम की रोशनी में दावा मसीहीयत और महदियत फ़रमाया तो सख़्त मुख़ालिफ़त का शोर उठा और उस वक़्त के नामी मौलवी, मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी और मुहम्मद बशीर साहिब ने आप से मुनाज़रे किए और तारीख़ गवाह है कि इन मुनाज़रों में अल्लाह तआला ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को फ़तह अता फ़रमाई और मौलवी क़ुरआन और हदीस से हयाते मसीह (मसीह के जीवित आसमान में उठाए जाने) का कोई सबूत नहीं दे सके और यह महान फ़तह आज भी जारी है अब तो मौलवी अहमदियों से वफ़ात मसीह के हवाला से बात करने से भी कतराते हैं और अब हालत यह है कि वफ़ात मसीह और ख़त्म-ए-नबुव्वत और सदाक़त मसीह मौऊद क़ुरआन और हदीस से जैसे मज़ामीन के सम्बन्ध में दलील से तो बात नहीं करते जबकि केवल और केवल ग़ालियां निकाल कर अपनी कमज़ोरी मिटाते हैं और नहीं समझते कि क़ुरआन-ए-मजीद साफ़ फ़रमाता है कि ख़ुदा का कोई मामूर ऐसा नहीं आया कि उसके ज़माने के मुख़ालिफ़ीन ने दलायल से आजिज़ आ कर उसको अपमानित नहीं किया हो उसके साथ उपहास न किया हो अल्लाह तआला फ़रमाता है:

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ

(सूरः यासीन : 31)

इन मुख़ालफ़तों के दौर में जबकि कुछ अपनों को भी ठोकर लग गई थी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के आदेश से 1891 में ही जलसा सालाना की बुनियाद रखी और अल्लाह से इलम पाकर ऐलान फ़रमाया कि :

"इस जलसे को मामूली इन्सानी जलसों की तरह ख़्याल न करें यह वह कार्य है जिसकी पूर्ण सहायता और बुलंदी की बुनियाद इस्लाम पर है इस सिलसिला की बुनियादी ईंट ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से रखी है और इसके लिए कौमें तैयार की हैं जो अनक़रीब इसमें आ मिलें गी क्योंकि यह उस क़ादिर का कार्य है जिसके आगे कोई बात अनहोनी नहीं।"

(मजमूआ इश्तिहारात, भाग प्रथम, पृष्ठ 361 इश्तिहार नंबर 91 मुद्रित क़ादियान 2019 ई.)

उस वक़्त पहले जलसे में 70 लोग शामिल हुए थे और दुश्मन आप पर फ़तवे लगा कर जो समझते थे कि उन्होंने मुसलमानों को आपसे मिलने और आपकी बैअत करने से रोक दिया है इन समस्त दुश्मनों ने सख़्त मुँह की खाई क़ादियान की रौनक़ें बढ़ने लगीं और फिर हज़रत-ए-अक़दस

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर (उत्तर प्रदेश)

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद ख़िलाफ़ते अहमदिया के पहले जलसा सालाना में हाज़िरी की संख्यां तीन हज़ार तक पहुंच गई और फिर दौर ख़िलाफ़त में जलसा सालाना की रौनक प्रत्येक लिहाज़ से बढ़नी शुरू हुई और हाज़िरीन-ए-जलसा की संख्यां सैंकड़ों और हज़ारों से निकल कर लाखों तक पहुंच गई। दुनिया के बीसियों देशों की नुमाइंदगी शुरू हो गई सैंकड़ों ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम बुद्धिमान सियास्तदान और देशों के वज़ीर देशों की हकूमतों के लीडर इस में शामिल होने और इस के लिए अपने संदेश भिजवाने को गौरव समझने लगे। और प्रत्येक धर्म को मुहब्बत प्यार और अमन की आवाज़ उठाने के लिए एक ऐसा स्टेज हाथ आ गया जहां बिना धर्मिक भेदभाव और क़ौम और वतन के प्रत्येक मुहब्बत की आवाज़ बुलंद करता है और अपना प्रेम का सन्देश देता है। अल्हम्दुलिल्ला कि अब यह जलसा m.t.a के माध्यम से समस्त दुनिया में सुना और देखा जा रहा है और दुनिया की कई भाषाओँ में साथ के साथ इसके अनुवाद हो रहे हैं और अब जो 2021 में u.k का जलसा सालाना हुआ है इस में तो दुनिया ने एक अजीब दृश्य देखा कि दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों में जलसा सालाना सुनने वालों ने एक दूसरे को अपने अपने देशों में जलसा सुनते हुए देखा और इस से पूर्व के बुज़ुरगों की यह भविष्यवाणी पूरी हुई कि ان المومن فی زمان القائم وھو بالمشرق لیری اخاہ الذی فی المغرب و کذا الذی فی المغرب یری اخاہ الذی فی المشرق (बिहारुल अनवार शेख़ मुहम्मद बाक़िर मजलेसी बाब 27 पृष्ठ 441) कि इमाम महदी के ज़माना में एक मोमिन जो पूरब में होगा वह अपने उस भाई को देख लेगा जो पश्चिम में होगा और जो पश्चिम में होगा वह अपने पूरब वाले भाई को देख लेगा और समस्त दुनिया गवाह है कि अलहमदु लिल्लाह ख़िलाफ़त अहमदिया के माध्यम से और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा की इच्छा से आयोजित जलसा सालाना के माध्यम से ग़लबा इस्लाम की यह भविष्यवाणी निहायत शान से पूरी हो चुकी है। इसी तरह फ़रमाया :-

ینادی منادمن السماء باسم المھدی فیسمع من بالمشرق ومن بالمغرب حتی لا یبقی راقد الا استیقظ

(عقد الدرر فی اخبار المنتظر، الفصل الثالث، صفحہ 171، مطبوعہ اردن)

कि महदी के नाम पर मुनादी करने वाला मुनादी करेगा और उसकी आवाज़ को पूरब और पश्चिम का प्रत्येक व्यक्ति सुनेगा यहां तक कि एक वक़्त आएगा कि प्रत्येक सोने वाला जाग जाएगा।

अतिरिक्त इसके यह जलसा दुनिया की समस्त रूहों को बैअत के माध्यम से एकेश्वरवाद की लड़ी में भी पिरो रहा है इसलिए इस सम्बन्ध में हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन साहिब की भविष्यवाणी कि इमाम महदी के वक़्त जब बैअत की जा रही होगी तो आसमान से आवाज़ आएगी कि ھذا خلیفۃ اللہ المھدی فاسمعوا لہ واطیعو यह अल्लाह के महदी का ख़लीफ़ा है इसको क़बूल कर लो और इसकी इताअत करो ।

(कयामत नामा, पृष्ठ 4)

बैअत का महान दृश्य जलसा सालाना की सच्चाई और मसीह मौऊद की महान विजय का प्रमाण है। अतः जलसा सालाना सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों की सदाक़त और जमाअत अहमदिया की प्रगति में एक बुनयाद के पत्थर की हैसियत रखता है इसके बाद 1894 ई. में अल्लाह तआला ने केवल अपने फ़ज़ल से इमाम महदी के सम्बन्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सूर्य चंद्र ग्रहण वाली भविष्यवाणी को निहायत शान से पूरा फ़रमा कर सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम की सदाक़त का एक निशान प्रकट फ़र्मा दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस भविष्यवाणी की सदाक़त ने आसमानी गवाह की शक्ल में चमकते हुए सूर्य की तरह आपकी सच्चाई को प्रमाणित फ़र्मा दिया। लेकिन जब दुनिया ने इस आसमानी शहादत से फ़ायदा नहीं उठाया तो पूर्व के ग्रंथों की भविष्यवाणियों की रोशनी में कि इमाम महदी के ज़माना में ताऊन फूटेगी 1898 ई. में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से इल्हाम पा कर ताऊन फैलने की भविष्यवाणी फ़रमाई। यह वह भविष्यवाणी है जिसका वर्णन क़ुरआन-ए-मजीद में भी है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी इस की भविष्यवाणी फ़रमाई है।

क़ुरआन-ए-मजीद में सूरत अल् नमल की आयत 83 में अल्लाह फ़रमाता है وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ "और जब उन पर फ़रमान सादिक़ आ जाएगा तो हम उनकी सतह ज़मीन में से एक जानवर निकालेंगे जो उनको काटेगा इस वजह से कि लोग हमारी आयत पर यक़ीन नहीं लाते थे।

और हदीस में वर्णन है कि इमाम महदी के ज़माना की यह निशानी होगी कि उसके वक़्त में इस क़दर भयानक ताऊन की महामारी फूटेगी कि जिस घर में सात व्यक्ति होंगे उनमें से पाँच मर जाऐंगे। फ़रमाया इमाम महदी अलैहिस्सलाम की आमद से पूर्व दो तरह की मौतें होंगी अर्थात लाल मौत और सफ़ैद मौत। लाल मौत अर्थात जंगें और सफ़ैद मौत अर्थात महामारी और इस क़दर महामारी पड़ेगी कि जिस घर में सात लोग होंगे पाँच मर जाऐंगे।

(बिहारुल अनवार, पृष्ठ 156 अकमालुद्दीन, मुद्रित हैदरुल नजफ़)

इसलिए इन भविष्यवाणियों के अनुसार और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हाम की रोशनी में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में भारत में अत्यधिक ताऊन फूटी जिसमें लाखों लोग मारे गए। उधर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जो लोग तेरे घर की

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

चारदीवारी में होंगे वे बावजूद टीका नहीं लगाने के ताऊन की महामारी से सुरक्षित रहेंगे और अल्लाह ने दुनिया को यह चमत्कार दिखाया कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़ानदान में और आप अलैहिस्सलाम के सहाबा में से कोई एक व्यक्ति भी ताऊन से फ़ौत नहीं हुआ जबकि आप अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ उल्मा जो आप अलैहिस्सलाम का तरिस्कार और अपमान करते थे उनमें से कई ताऊन की मौत का शिकार हुए और हुज़ूर अलैहिस्सलाम जिन्हों ने मसीह और महदी का ऐलान फ़रमाया और ताऊन के आने की भविष्यवाणी फ़रमाई थी आप अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के अनुसार ताऊन आई और फिर भविष्यवाणी के अनुसार आप अलैहिस्सलाम और आपकी चारदिवारी में रहने वाले सब लोग ख़ुदा तआला की कृपा से सुरक्षित रहे और एक दुनिया गवाह है कि इस ताऊन के परिणाम में भी बकसरत लोग हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए और ताऊन भी आप अलैहिस्सलाम की महान तरक़्क़ी का निशान बन कर उभरी।

प्रिय श्रोतागणों! हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक दौर में आपने जमाअत अहमदिया की प्रगति के लिए जो भविष्यवाणियां फ़रमाई उनमें एक भविष्यवाणी ख़िलाफ़त अहमदिया के सम्बन्ध में है जिसका वर्णन हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने रिसाला अल् वसीयत में फ़रमाया है।

फ़रमाया : तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है और उसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह दायमी है जिसका सिलसिला क़ियामत तक खत्म नहीं होगा और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊं लेकिन मैं जब जाऊंगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का बराहीन-ए-अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरी ज़ात की निसबत नहीं है बल्कि तुम्हारी निसबत वादा है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे अनुयाई हैं क़ियामत तक दूसरों पर ग़लबा दूँगा।

(रिसाला अल् वसीयत, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 305)

इसलिए 27 मई 1908 ई. से जब से कि जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त का आरम्भ हुआ है अब तक 113 वर्ष गुज़र चुके हैं और एक दुनिया गवाह है कि ख़िलाफ़त अहमदिया के माध्यम से जमाअत ने इस क़दर तेज़ी से तरक़्क़ी की मनाज़िल तै की हैं कि इसकी उदाहरण दुनिया में कहीं और नहीं मिलती।

आज अहमदियत क़ादियान से निकल कर दुनिया के 213 मुल्कों में फैल गई है जिसका ऐलान हज़रत अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने जलसा सालाना यू.के 2019 ई. के ख़िताब में फ़रमाया जो हुज़ूर ने 4 अगस्त 2019 ई. को इरशाद फ़रमाया था इस ख़िताब में हुज़ूर अनवर ने केवल 2019 ई. में होने वाली जमाअती प्रगति का वर्णन करते हुए फ़रमाया :

वर्ष 2019-2018 तक समस्त संसार में अहमदिया जमाअत 213 देशों में फैल गई हैं हुज़ूर ने वज़ाहत करते हुए फ़रमाया कि अब तक UNO में 195 देशों की नुमाइंदगी है लेकिन इनके अतिरिक्त भी कुछ देशों हैं जो UNO के मेंबर तो नहीं लेकिन बाक़ायदा एक मुल्क के तौर पर क़ायम हैं हुज़ूर ने फ़रमाया 1984 ई. में जबकि ख़लीफ़ा वक़्त को पाकिस्तान की शदीद मुख़ालिफ़त की वजह से हिज्रत करनी पड़ी थी 1984 से अब तक 121 देशों में जमाअत फैल गई है। 1984 तक केवल 92 देशों में अहमदियत फैली थी और 1984 की हिज्रत के बाद 121 देशों में जमाअत फैली है। 1889 से 1984 तक 95 वर्षों में केवल 92 देशों तक जमाअत फैली और हिज्रत के बाद केवल 37 वर्षों में 121 देशों में जमाअत का पौधा लगा है। यह महान ग़लबा इस बात का शाहिद है कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने जिस महान ग़लबे की भविष्यवाणियां अता फ़रमाई थीं वह बरहक़ थीं और आपकी सदाक़त का चमकता हुआ निशान थीं।

इसके अतिरिक्त हुज़ूर अनवर ने वर्तमान जलसा सालाना 2021 ई. के अवसर पर केवल एक वर्ष में जमाअत की जो प्रगति का हैरत-अंगेज़ नक़्शा खींचा है वह आप अलैहिस्सलाम की सदाक़त का और ख़िलाफ़त अहमदिया की सदाक़त का मुंह बोलता सबूत है। वह इस बात का भी सबूत है कि सय्यदना व मोलाना हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इमाम महदी और मसीह मौऊद की आमद और उसके ग़लबा के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां फ़रमाई थीं वह भी सच्ची थीं।

हुज़ूर अक़्दस ने केवल एक वर्ष की प्रगति का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाया है कि एक वर्ष में 403 नई जमाअतें क़ायम हुई हैं 829 जगहें ऐसी हैं जहां पहली बार जमाअत का पौध लगा 211 मस्जिदों का निर्माण हुआ 92 देशों में 384 पुस्तकें पमफ़लेट 39 भाषाओं में प्रकाशित हुए 123 नए मिशन बने दुनिया के 102 देशों में जमाअती लेख प्रकाशित हुए। 90 देशों की लाइब्रेरियों में पुस्तकें रखी गईं 1970 नुमाइशें लगीं 103 देशों में 69 लाख से ज़्यादा लीफ़लेट्स तक़सीम हुए।

अल्हम्दुलिल्ला कि इस वक़्त M.T.A के 8 चैनल्ज़ चल रहे हैं जो 24 घंटे दुनिया की 17 भाषाओँ में इस्लामी प्रोग्राम प्रसारित कर रहे हैं जिनसे लाखों लोग लाभ उठा रहे हैं। 27 रेडियो-स्टेशन चल रहे हैं बुक स्टॉलज़ से 22 लाख लोगों ने लाभ प्राप्त किया हियूमैनिटी फ़रस्ट ने 345 मैडीकल कैंप लगाए। 75 हज़ार से अधिक वाकफ़ीन और वाकिफ़ात नौ की रुहानी फ़ौज तैयार हो रही हैं।

कम से कम 3000 वाटर पंप लगाए गए हैं। 12 देशों में 685 स्कूल और कई हस्पताल चल रहे हैं।

केवल वर्ष 21-2020 में 121179 नई बैअतें हुईं। अल् हम्दुलिल्लाह अला ज़ालिक।

अंत में विनीत जमाअत अहमदिया की प्रगति के सम्बन्ध में सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक महान भविष्यवाणी का वर्णन करना चाहता हैं जिस का सम्बन्ध क़ादियान दारुल अमान की प्रगति से है और जो ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा के बाबरकत दौर में निहायत शान के साथ पूरी हुई है। अल् हम्दुलिल्लाह अला ज़ालिक।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इल्हाम फ़रमाया था : "एक दिन आने वाला है जो क़ादियान सूरज की तरह चमक कर दिखला देगी कि वह एक सच्चे का स्थान है।"

(दाफ़ेउल बला, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 18 पृष्ठ 231)

क़ादियान की यह तरक़्क़ी हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र ज़माने से लेकर ख़िलाफ़त-ए-राबेया के समय तक जारी रही जिसमें ख़िलाफ़त ख़ामिसा के मुबारक दौर में महान इन्क़िलाबी तथा तरक़्क़ी का प्रकटन हुआ।

क़ादियान की तब्लीग़ m.t.a के माध्यम से live तौर पर दुनिया के किनारों तक पहुंची और ऊर्दू और अरबी और अंग्रेज़ी प्रोग्राम प्रसारित होने शुरू हुए।

क़ादियान में ग़ैरमामूली तौर पर अहमदी जनसंख्या में बढ़ोतरी हुई। क़ादियान में निहायत ख़ूबसूरत जमाअती इमारात के निर्माण हुए जिनमें

मर्कज़ी मसाजिद के निर्माण व बढ़ोतरी, मुहल्लाजात में मसाजिद के निर्माण मिनार्तुल मसीह की साफ़-सफ़ाई तथा सुंदरता दारुल मसीह की रेनोवेशन, बहिश्ती मक़बरा में स्थान ज़हूर क़ुदरत सानिया पर एक ख़ूबसूरत और बा-वक़ार यादगार। चारदीवारी मज़ारे मुबारक हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पुनः निर्माण जिसके निर्माण के वक़्त अहबाब क़ादियान को पहरेदारी का महान सौभाग्य नसीब हुआ, जामिआ अहमदिया के निर्माण, दफ़्तर के निर्माण, नुरुद्दीन लाइब्रेरी की अज़ीमुश्शान इमारत, गेस्ट हाऊसज़ का निर्माण, दफ़्तर लजना इमाइल्लाह भारत, नूर हस्पताल की अज़ीमुश्शान इमारत, फ़ज़ले उम्र प्रिंटिंग प्रैस, पुराने स्कूल में दफ़ातिर सदर अंजुमन अहमदिया की रेनोवेशन और बा वक़ार सेटिंग और सुंदरता।

अल्हमदो लिल्लाह कि क़ादियान आज पहले से बढ़कर दुनिया के ध्यान देने का मर्कज़ बन गया है और ये सब ख़िलाफ़त की अज़ीमुश्शान बरकत है। अल्लाह तआला हम सब को क़ादियान का हक़ अदा करने और ख़िलाफ़त के साथ अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

सय्यदना हज़रत अक़्दस अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

आप में से प्रत्येक का फ़र्ज़ है कि ... यह नुक्ता हमेशा याद रखे कि उसकी सारी प्रगति और कामयाबियों का राज़ ख़िलाफ़त से जुड़े रहने में ही है। वही व्यक्ति सिलसिला के लिए लाभदायक बन सकता हैं जो अपने आपको इमाम से जोड़े रखता है अगर कोई व्यक्ति इमाम के साथ अपने आपको जोड़े नहीं रखे तो चाहे दुनिया-भर के ऊलूम जानता हो उसकी कोई भी हैसियत नहीं। जब तक आपकी अक़्लें और तदबीरें ख़िलाफ़त के अधीन रहेंगी और आप अपने इमाम के पीछे उसके इशारों पर चलते रहेंगे अल्लाह तआला की सहयता और नुसरत आपको हासिल रहेगी। (अल् फ़ज़ल 30 मई 2003 ई. पृष्ठ 2 कालम यौमे ख़िलाफ़त के अवसर पर अहबाब जमाअत रवालपंडी के नाम हुज़ूर अनवर का सन्देश)

प्रिय श्रोतागणों! अंत में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की महान प्रगति पर आधारित वर्णन के साथ-साथ यह ईमान अफ़रोज़ हक़ीक़त भी वर्णन करना चाहता हूँ कि पिछले दो वर्षों में जब से कि दुनिया कौरोना की ख़तरनाक सांसारिक महामारी से जूझ रही है दुनिया का कोई विभाग ऐसा नहीं रहा जो पतन के दौर से नहीं गुज़र रहा प्रत्येक तरफ़ परेशानी और मुसीबतों ने अपना जाल बिछा रखा है। अल्लाह तआला का यह एहसान है कि जमाअत अहमदिया अल्लाह तआला के फ़ज़ल से प्रत्येक मैदान में प्रगति की मनाज़िल तै कर रही है। हज़रत-ए-अक़दस अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की तरफ़ से पेश करदा जमाअत अहमदिया की प्रगति की एक झलक जो अभी पेश की गई है इस बात पर गवाह है कि अल्लाह तआला प्रत्येक मैदान में जमाअत को प्रगति से नवाज़ रहा है। जमाअत के नफ़ूस में बरकत अता हो रही है जमाअत के अम्वाल में बरकत नाज़िल हो रही है और दुनिया का कोई हिस्सा ऐसा नहीं है जहां आलमगीर जमाअत अहमदिया ख़िलाफ़त अहमदिया के ज़ेर-ए-साया फ़तह के ढोल न बजा रही हो।

अंत पर विनीत सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ईमान अफ़रोज़ दो इक़तिबास पेश करके अपनी तक़रीर को ख़त्म करता है। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

“नई ज़मीन होगी और नया आसमान होगा। अब वे दिन नज़दीक आते हैं कि जो सच्चाई का सूरज पश्चिम की तरफ़ से चढ़ेगा और यूरोप को सच्चे ख़ुदा का पता लगेगा और बाद इसके तौबा का दरवाज़ा बंद होगा क्योंकि दाख़िल होने वाले बड़े ज़ोर से दाख़िल हो जाएंगे और वही बाक़ी रह जाऐंगे जिनके दिल पर फ़ितरत से दरवाज़े बंद हैं और नूर से नहीं बल्कि अन्धकार से मुहब्बत रखते हैं। क़रीब है कि सब मिल्लतें हलाक होंगी परन्तु इस्लाम और सब छल टूट जाऐंगे परन्तु इस्लाम का आसमानी हर्बा कि वह नहीं टूटेगा न कुंद होगा जब तक दज्जालियत के टुकड़े टुकड़े न कर दे वह वक़्त क़रीब है कि ख़ुदा की सच्ची तौहीद जिसको जंगलों के रहने वाले और समस्त तालीमों से ग़ाफ़िल भी अपने अंदर महसूस करते हैं मुल्कों में फैलेगी। उस दिन न कोई बनावटी कफ़्फ़ारा बाक़ी रहेगा और न कोई बनावटी ख़ुदा और ख़ुदा का एक ही हाथ कुफ़्र की सब तदबीरों का अंत कर देगा लेकिन न किसी तलवार से और न किसी बंदूक़ से बल्कि मुस्तइद रूहों को रोशनी अता करने से और पाक दिलों पर एक नूर उतारने से। तब ये बातें जो मैं कहता हूँ समझ में आएँगी।

(मजमूआ इश्तिहारात, भाग 1 पृष्ठ 183 इश्तिहार नंबर159 मुद्रित क़ादियान 2019 ई.)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

“ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार ख़बर दी है कि वह मुझे बहुत प्रतिष्ठा देगा और मेरी मुहब्बत दिलों में बिठाएगा और मेरे सिलसिले को समस्त ज़मीन में फैलाएगा और सब फ़िर्क़ों पर मेरे फ़िर्क़ा को विजय करेगा और मेरे फ़िर्के के लोग इस क़दर इलम और अध्यात्म ज्ञान में कमाल हासिल करेंगे कि अपनी सच्चाई के नूर और अपने दलायल और निशानों की दृष्टि से सब का मुँह-बंद कर देंगे और प्रत्येक क़ौम इस स्रोत से पानी पीएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा यहां तक कि ज़मीन पर फैल जावेगा। बहुत सी रोकें पैदा होंगी और इबतिला-ए-आयेंगे परन्तु ख़ुदा सब को मध्य से उठा देगा और अपने वादा को पूरा करेगा और ख़ुदा ने मुझे संबोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूंगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे।

अतः सुनने वालो इन बातों को याद रखो और उन पूर्व की भविष्यवाणियों की ख़बरों को अपने संदूक़ों में सुरक्षित रख लो कि यह ख़ुदा का कलाम है जो एक दिन पूरा होगा।

(तजल्लियात-ए-इलाही, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 409)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

हे समस्त लोगो! सुन रखो कि यह उसकी भविष्यवाणी है जिसने ज़मीन और असमान बनाया। वह अपनी इस जमाअत को समस्त मुल्कों में फैलाएगा और स्पष्ट तर्कों और प्रमाणों की दृष्टि से सब पर उनको ग़लबा प्रदान करेगा वह दिन आते हैं बल्कि क़रीब हैं कि दुनिया में केवल यही एक मज़हब होगा जो इज़्ज़त के साथ याद किया जाएगा। ख़ुदा उस मज़हब और इस सिलसिला में निहायत दर्जा और असाधारण बरकत डालेगा और प्रत्येक को जो उसके खत्म करने की फ़िक्र रखता है ना-मुराद रखे गा और यह ग़लबा हमेशा रहेगा यहां तक कि क़ियामत आ जाएगी।

(तज़करतुश शहादतेन, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 66)

अल्लाह तआला हमें वह आख़िरी रुहानी ग़लबा भी देखना नसीब फ़रमाए।

واخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

ख़ूबी सिद्ध नहीं तो क्योंकर स्वीकार किया जाए कि आलोचना सही होगी। अपितु जो व्यक्ति ऐसे योग्य और कामिल इन्सानों पर ऐतराज़ करता है कि जो लोग अपनी ख़ूबी का कुछ नमूना दिखा देते हैं उससे (अधिक कोई दीवाना और पागल नहीं होता। (इसी से, पृष्ठ 441

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सरस-सुबोध लेख का चमत्कार गहरे सागर की तरह दिया गया है

वह लानती कीड़ा है न कि आदमी। जो स्वयं कलाविहीन होकर ऐसे व्यक्ति की सरसता और सुबोधता पर ऐतराज़ करे

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

यदि इन्सान ऐसा सुल्तानुलक़लम हो जाए कि ज्ञान और दर्शन शास्त्र संबंधी बातों को नाना प्रकार की रंगीन इबारतों और सरस-सुबोध रूपकों में अदा कर सके और उसे ख़ुदा की दानशीलता से पद्य और गद्य में एक महारत हो जाए और तकल्लुफ एवं असमर्थता शेष न रहे तो फिर पूर्णतम कलाम की हालत में यदि उसकी इबारतों में उचित स्थानों और मुक़ामों में कुछ क़ुर्आनी आयतें आ जाएं या पहले लोगों के कुछ उदाहरण या वाक्य आ जाएं तो आपत्तिजनक न होगा। क्योंकि उसकी भाषा में अलंकारिकता और वाग्मियता का कमाल एक प्रमाणित बात है जो दरिया के समान बहता और वायु की तरह चलता है वह लानती कीड़ा है न कि आदमी। जो स्वयं कलाविहीन होकर ऐसे व्यक्ति की सरसता और सुबोधता पर ऐतराज़ करे जिसने बहुत सी अरबी पुस्तकें लिख कर सरस सुबोध इबारत का चमत्कार सिद्ध कर दिखाया और प्रकट कर दिया कि उसको बलीग़ इबारत के आने का चमत्कार गहरे सागर की तरह दिया गया है।

ये लोग इसी तत्व के आदमी हैं जैसा कि वह व्यक्ति था जिसके मुंह से

فَتَبَارَكَ اللّٰهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ

निकला था और संयोग से वही आयत उतर गई तब वह मुर्तद हो गया

इस प्रकार दुष्ट प्रकृति लोग हमेशा होते रहे हैं जो ख़ुदा के कलाम पर भी ऐतराज़ करते हुए नहीं डरते और ख़ाली मस्तिष्क होने के बावजूद मीन-मेख से नहीं रुके। उदाहरणतया जिन दुष्ट लोगों ने ऐतराज़ किया कि पवित्र क़ुर्आन की सूरह के कुछ वाक्य दीवान इम-रउल क़ैस के एक क़सीदे का वक्तव्य है। अर्थात् वे वाक्य उस से लिए गए हैं। उनको यह सोचना चाहिए था कि पवित्र क़ुर्आन के पहली पुस्तकों के सब क़िस्से जो नितांत रंगीन इबारत में वर्णन किए गए हैं और जो दर्शन शास्त्र के अध्यात्म ज्ञान, वास्तविकताएं जो उसमें चमत्कारपूर्ण इबारत में वर्णन किए गए हैं वह अरब के किस शाइर का वक्तव्य है। तो ऐसे व्यक्ति अंधे हैं न कि सुजाखे जो उस ख़ूबी को नहीं देखते जो एक दरिया के समान बहती है। और एक-दो वाक्यों में भावसाम्य पाकर कुधारणा पैदा करते हैं। ये लोग इसी तत्व के आदमी हैं जैसा कि वह व्यक्ति था जिसके मुंह से

فَتَبَارَكَ اللّٰهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ (अल् मोमेनून-15)

निकला था और संयोग से वही आयत उतर गई तब वह मुर्तद हो गया कि मेरा ही वाक्य क़ुर्आन में दाख़िल किया गया। अब पीर मेहर अली शाह साहिब की करतूत को देखना चाहिए कि स्वयं तो खंडों की पुस्तक के मुक़ाबले में एक खंड भी न लिख सके और इतनी मोटी पुस्तक में से दो-चार वाक्य प्रस्तुत कर दिए कि ये अमुक पुस्तक में मौजूद हैं। अब सोचो कि यह कितनी कमीनगी है। क्या कोई साहि-त्यकार इसको पसन्द करेगा। साहित्यकार जानते हैं कि हज़ारों वाक्यों में से यदि दो-चार वाक्य बतौर वक्तव्य हों तो उन से बलाग़त की शक्ति में कुछ अन्तर नहीं आता अपितु इस प्रकार के परिवर्तन भी एक शक्ति है(इसी से पृष्ठ 442)

पीर महर अली शाह ना केवल दरोग़ गो बल्कि सख़्त दरोग़ गो हैं साथ ही कोड़ मग़ज़ भी

एक इन्साफ करने वाला इन्सान समझ सकता है कि जिस व्यक्ति ने इतने लम्बे समय तक अवसर पाकर अपने अकेले कोने में दो-चार पृष्ठ भी ऐजाज़ुल मसीह का नमूना प्रस्तुत नहीं किया वह लाहौर के मुकाबले पर यदि होता तो क्या लिख सकता था। वह पीर फ़र्तूत जो इतने सहारे के साथ भी उठ न सका वह सहारे के बिना क्योंकर उठ सकता था। निःसंदेह समझो कि पीर मेहर अली शाह साहिब केवल झूठ के सहारे अपनी मंद बुद्धि पर पर्दा डाल रहे हैं और वह न केवल झूठ बोलते हैं अपितु महा झूठे हैं। उनका यह अन्तिम झूठ भी हमें कभी न भूलेगा जिस पर उन्होंने दोबारा भी इस पुस्तक पर आग्रह किया कि मैं लाहौर में वादे के अनुसार आया था परन्तु तुम क़ादियान से बाहर न निकले। परन्तु जिन लोगों ने उनका विज्ञापन देखा होगा वे यदि चाहें तो गवाही दे सकते हैं कि उन्होंने पूर्ण चालबाज़ी से मुक़ाबले से इन्कार किया था। (ईज़न पृष्ठ 443)

ये हैं गद्दी नशीन इस देश के जिन्होंने अकारण मौलवी होने का दम भरकर हमेशा के लिए एक काला दाग़ अपने चेहरे पर लगा लिया

'ऐजाज़ुलमसीह' पुस्तक के प्रकाशन से पीर मेहर अली साहिब को दोबारा अवसर दिया गया था कि वह यदि संभव होतो अब भी अपनी ज्ञान की योग्यता से मेरी उस प्रतिष्ठा को समाप्त कर दें। जिस से सैकड़ों लोग बैअत के सिलसिले में दाख़िल हो रहे हैं। परन्तु वे बिल्कुल उस गूंगे की तरह रह गए जिस पर इशारे से बात करना भी कठिन होता है। और यदि किया तो यह किया कि दो-चार वाक्य दो सौ पृष्ठों की पुस्तक में से प्रस्तुत कर दिए कि ये मुक़ामात हरीरी इत्यादि के कुछ वाक्यों की चोरी है और केवल एक या दो कातिब की भूल को सर्फ़ी नह्वी (व्याकरण की) ग़लती ठहरा दिया और अपनी अनभिज्ञता से कुछ सरस, सुबोध तर्कीबों को यों ही ग़ैर फ़सीह तथा ग़लत समझ लिया है। ये हैं गद्दी नशीन इस देश के जिन्होंने अकारण मौलवी होने का दम भरकर हमेशा के लिए एक काला दाग़ अपने चेहरे पर लगा लिया। (इसी से पृष्ठ 444)

यह महर अली नहीं बल्कि मोहर अली हैं

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "जबकि उनका नाम महर अली नहीं है बल्कि मोहर अली है क्योंकि वह अपने आजिज़ और साकित रहने से किताब ऐजाज़ुलमसीह के एजाज़ पर मोहर लगाते हैं।"

(नुज़ूलुल मसीह , रूहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 432 हाशिया)

अब नीचे हम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ वे ईमान अफ़रोज़ इर्शादात प्रस्तुत करते हैं जिनमें आप ने वर्णन फ़रमाया है कि अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को विशेषता क़ुरआन का इलम अता फ़रमाया था जिस में कोई भी आप मुक़ाबला नहीं कर सकता था। इसी तरह अरबी का इलम भी अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को ऐसा अता फ़रमाया था कि जो आप अलैहिस्सलाम के लिए एक मोजिज़ा और निशान के तौर पर था और इसी बिना पर आप अलैहिस्सलाम मलवियों और गद्दी नशीनोंको मुक़ाबला के लिए बुलाते थे क्योंकि ये उलूम चमत्कार के रूप में आप अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अता फ़रमाए थे।

अब किसी को मआरिफ़ क़ुरआनी में मुक़ाबला की ताक़त नहीं

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं : एक और भविष्यवाणी का निशान है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 238 में दर्ज है और वह यह है :-

الرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْآنَ

इस आयत में अल्लाह तआला ने क़ुर्आन के ज्ञान का वादा दिया था तो उस वादे को इस प्रकार से पूरा किया कि अब किसी को क़ुर्आनी मआरिफ़ में मुकाबले की शक्ति नहीं। मैं सच-सच कहता हूं कि यदि कोई मौलवी इस देश के समस्त मौलवियों में से क़ुर्आन के मआरिफ़ में मुझ से मुकाबला करना चाहे और किसी सूरह की एक तफ़्सीर में लिखूं तथा एक की अन्य विरोधी लिखे तो वह अत्यंत अपमानित होगा और मुकाबला नहीं कर सकेगा। यही कारण है कि आग्रह के बावजूद मौलवियों ने इस ओर मुख नहीं किया। अतः यह एक महान निशान है परन्तु उनके लिए जो इन्साफ़ और ईमान रखते हैं।

(ज़मीमा रिसाला अंजाम आथम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 11 पृष्ठ 291)

तथा फ़रमाया इस इल्हाम की दृष्टि से ख़ुदा ने मुझे क़ुरआन का ज्ञान अता किया हैं। और मेरा नाम अव्वलुल मोमेनीन रखा। और मुझे समुंद्र की तरह मआरिफ़ और हक़ायक़ से भर दिया है। और मुझे बार-बार इल्हाम दिया है कि इस ज़माना में कोई मार्फ़त-ए-इलाही और कोई मुहब्बत-ए-इलाही तेरी मार्फ़त और मुहब्बत के बराबर नहीं।

(ज़रूरतुल इमाम रूहानी ख़ज़ायन, भाग 13 पृष्ठ 502)

मुझे क़ुरआन के हक़ायक़ और मआरिफ़ के समझने में हर एक रूह पर ग़लबा दिया गया है

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि मुझे क़ुरआन के हक़ायक़ और मआरिफ़ के समझने में हर एक रूह पर ग़लबा दिया गया है। और अगर कोई मौलवी मुख़ालिफ़ मेरे मुक़ाबिल पर आता जैसा कि मैंने क़ुरआन की तफ़सीर के लिए बार-बार उन को बुलाया तो ख़ुदा उसको अपमानित और शर्मिंदा करता। अतः क़ुरआन का ज्ञान जो मुझ को अता किया गया यह महान प्रतापी ख़ुदा का एक निशान है।

(सिराज-ए-मुनीर, रूहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 41)

अगर एक दुनिया जमा हो कर मेरी परीक्षा के लिए आए तो मुझे विजयी पाएगी

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : जो धार्मिक और क़ुरआन के मआरिफ़ तथ्य और रहस्य वाग्मिता और स्पष्टता के साथ मैं लिख सकता हूँ दूसरा हरगिज़ नहीं लिख सकता। अगर दुनिया इकट्ठे होकर मेरी इस परीक्षा के लिए आए तो मुझे विजयी पाएगी★ और अगर सभी लोग मेरे मुकाबला पर उठें तो ख़ुदा तआला की कृपा से मेरा ही पल्ला भारी होगा। देखो में स्पष्ट कहता हूँ और खोलकर कहता हूँ कि इस समय हे मुसलमानों तुम में वे लोग भी हैं जो मुफ़स्सिर और मुहद्दिस कहलाते हैं और क़ुरआन के मआरिफ़ और तथ्यों को जानने के दावेदार हैं और वाग्मिता और स्पष्टता का दम मारते हैं और वे लोग भी हैं जो फ़ुकराअ कहलाते हैं और चिश्ती और क़ादरी और नक्शबंदी और सुहरावर्दी आदि नामों से अपने आप को मनोनीत करते हैं। उठो ! और इस समय उन्हें मेरे मुकाबला पर लाओ।

(अय्यामुस्सुलह, रूहानी ख़ज़ायन भाग 14 पृष्ठ 407)

तफ़हीम-ए-इलाही मसीह मौऊद के साथ साथ है
मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि तफ़हीम इलाही मेरे साथ साथ है

और वह प्रतापी ख़ुदा जिस वक़्त चाहता है कुछ मआरिफ़ क़ुरआन के मेरे पर खौलता है और असल मंशा कुछ आयात का साथ उनके सबूत के मेरे पर ज़ाहिर फ़रमाता है और कील के गढ़ने की तरह मेरे दल के अंदर दाख़िल कर देता है अब मैं उस ख़ुदा की नेअमत को क्योंकर छोड़ दूं और जो फ़ैज़ बारिश की तरह मेरे पर हो रहा है क्योंकर उससे इंकार करूँ।(मुबाहिसा लुधियाना रूहानी ख़ज़ायन भाग 4 पृष्ठ 21)

अगर कोई मौलवी अरबी की बलाग़त फ़साहत में मेरा मुक़ाबला करना चाहेगा तो वो ज़लील होगा

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं मैं पुनः सच्चाई के तलाश करने वलों के लिए आम ऐलान देता हूँ कि अगर वे अब भी नहीं समझे तो नए सिरे से अपनी तसल्ली करलें। और याद रखें कि ख़ुदा तआला से छःप्रकार के निशान मेरे साथ हैं। प्रथम। यदि कोई मौलवी अरबी की सरसता सुबोधता में मेरी किताब का मुक़ाबला करना चाहेगा तो वह अपमानित होगा। मैं प्रत्येक घमंडी को इख़्तियार देता हूँ कि इसी अरबी मकतूब के मुक़ाबिल पर सामने आए। अगर वे इस अरबी के मकतूब के मुक़ाबिल पर कोई रिसाला व्यवस्थापिक रूप से नज़म-ओ-नस्र बना सके और एक मादरी भाषा वाला जो अरबी हो कसम खा कर उसका सत्यापन कर सके तो मैं काज़िब हूँ। द्वितीय। और अगर यह निशान मंज़ूर न हो तो मेरे मुख़ालिफ़ किसी सूरः क़ुरआन की समक्ष तफ़सीर बनाएं अर्थात आमने सामने एक जगह बैठ कर बतौर फ़ाल क़ुरआन शरीफ़ खोला जाए। और पहली सात आयतें जो निकलें उनकी तफ़सीर में भी अरबी में लिखूँ और मेरा मुख़ालिफ़ भी लिखे। फिर अगर मैं हक़ायक़ मआरिफ़ के वर्णन करने में सरीह ग़ालिब न रहू तो फिर भी मैं झूठा हूँ। (ज़मीमा रिसाला अंजाम-ए-आथम, रुख़, भाग 11 पृष्ठ 304)

मैंने यह ज्ञान पा कर समस्त मुख़ालिफ़ों को क्या अब्दुल हक़ का गिरोह और क्या बतालवी का गिरोह, उद्देश्य सबको बुलंद आवाज़ से इस बात के लिए मौऊद किया कि मुझे इलम हक़ायक़ और क़ुरआन के मआरिफ़ दिए गए हैं। तुम लोगों में से किसी की मजाल नहीं कि मेरे मुक़ाबिल पर क़ुरआन शरीफ़ के हक़ायक़ और मआरिफ़ वर्णन कर सके। अतः इस ऐलान के बाद मेरे मुक़ाबिल उनमें से कोई भी न आया और अपनी जहालत पर जो समस्त ज़िल्लतों की जड़ है उन्होंने मोहर लगा दी। (इसी से पृष्ठ 311, हाशिया)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने प्रत्येक ग़लती पर पाँच रुपय के इनाम के लिए यह शर्त रखी थी कि ★ महर अली मुकाबले पर तफ़सीर भी लिखें। ★ तफ़सीर अरबी में लिखें। ★ अवधि के अंदर लिखे। एक मुद्दत दराज़ के बाद महर अली ने सैफ-ए-चिश्तियाई के नाम से एक किताब उर्दू में लिख कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भिजवाई जो सूरः फ़ातिहा की तफ़सीर नहीं थी बल्कि केवल बेहूदा नुक्ता चीनियों पर मुश्तमिल एक व्यर्थ किताब थी जिसका वर्णन हम इन शा अल्लाह आगे के अंक में करेंगे।

(मन्सूर अहमद मसरूर)
(अनुवादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

The Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. NO. GDP 45/2020-2022 Vol. 07 Thursday 10-17 March 2022 Issue NO. 10-11

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

मेरा ख़ुदा एक दिन भी मुझ से जुदा नहीं हुआ उसने अपनी भविष्यवाणियों के अनुसार एक संसार को मेरी ओर झुका दिया मैं निर्धन तथा दरिद्र था, उसने मुझे लाखों रुपए प्रदान किए तथा मुझे एक दीर्घ अवधि पूर्व आर्थिक सफ़लताओं की सूचना दी और प्रत्येक मुबाहला में मुझे विजय दी और मेरी सैकड़ों दुआएं स्वीकार कींऔर मुझे वे ने'मतें दीं कि जिन्हें मैं गिन नहीं सकता

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम का उपदेश

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

मैं सच-सच कहता हूं कि जब इल्हाम का सिलसिला आरंभ हुआ तो उस युग में मैं जवान था, अब मैं वृद्ध हुआ और आयु सत्तर वर्ष के निकट पहुंच गई तथा उस युग पर लगभग पैंतीस वर्ष गुज़र गए परन्तु मेरा ख़ुदा मुझ से एक दिन भी जुदा नहीं हुआ। उसने अपनी भविष्यवाणियों के अनुसार एक संसार को मेरी ओर झुका दिया। मैं निर्धन तथा दरिद्र था, उसने मुझे लाखों रुपए प्रदान किए तथा मुझे एक दीर्घ अवधि पूर्व आर्थिक सफलताओं की सूचना दी और प्रत्येक मुबाहला में मुझे विजय दी और मेरी सैकड़ों दुआएं स्वीकार कीं और मुझे वे ने'मतें दीं कि जिन्हें मैं गिन नहीं सकता। अत: क्या यह संभव है कि ख़ुदा तआला इतनी कृपा एवं उपकार एक व्यक्ति पर करे, हालांकि वह जानता है कि वह उस पर झूठ बांधता है जबकि मैं अपने विरोधियों की दृष्टि में तीस-बत्तीस वर्ष से ख़ुदा तआला पर झूठ बांध रहा हूं और प्रतिदिन रात्रि को अपनी ओर से बातें बनाता हूं और प्रात: काल कहता हूं कि यह ख़ुदा का कथन है और फिर उसके बदले में ख़ुदा तआला का मुझ से यह व्यवहार है कि वे जो अपने विचार में मोमिन कहलाते हैं उन पर मुझे विजय देता है और मुबाहला के समय उन्हें मेरे मुकाबले पर मृत्यु के घाट उतारता है या अपमान की मार से कुचल देता है तथा अपनी भविष्यवाणियों के अनुसार एक संसार को मेरी ओर खींच रहा है और हज़ारों निशान दिखाता है तथा प्रत्येक मैदान में प्रत्येक पहलू तथा प्रत्येक संकट के समय मेरी सहायता करता है (वास्तविकता यह है) कि जब तक उसकी दृष्टि में कोई सच्चा नहीं होता उसकी ऐसी सहायता वह कभी नहीं करता और न उसके लिए ऐसे निशान प्रकट करता है।

(परिशिष्ट हक़ीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 22, पृष्ठ 461)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab.
And published at office of Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India Editor:Mansoor Ahmad
जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

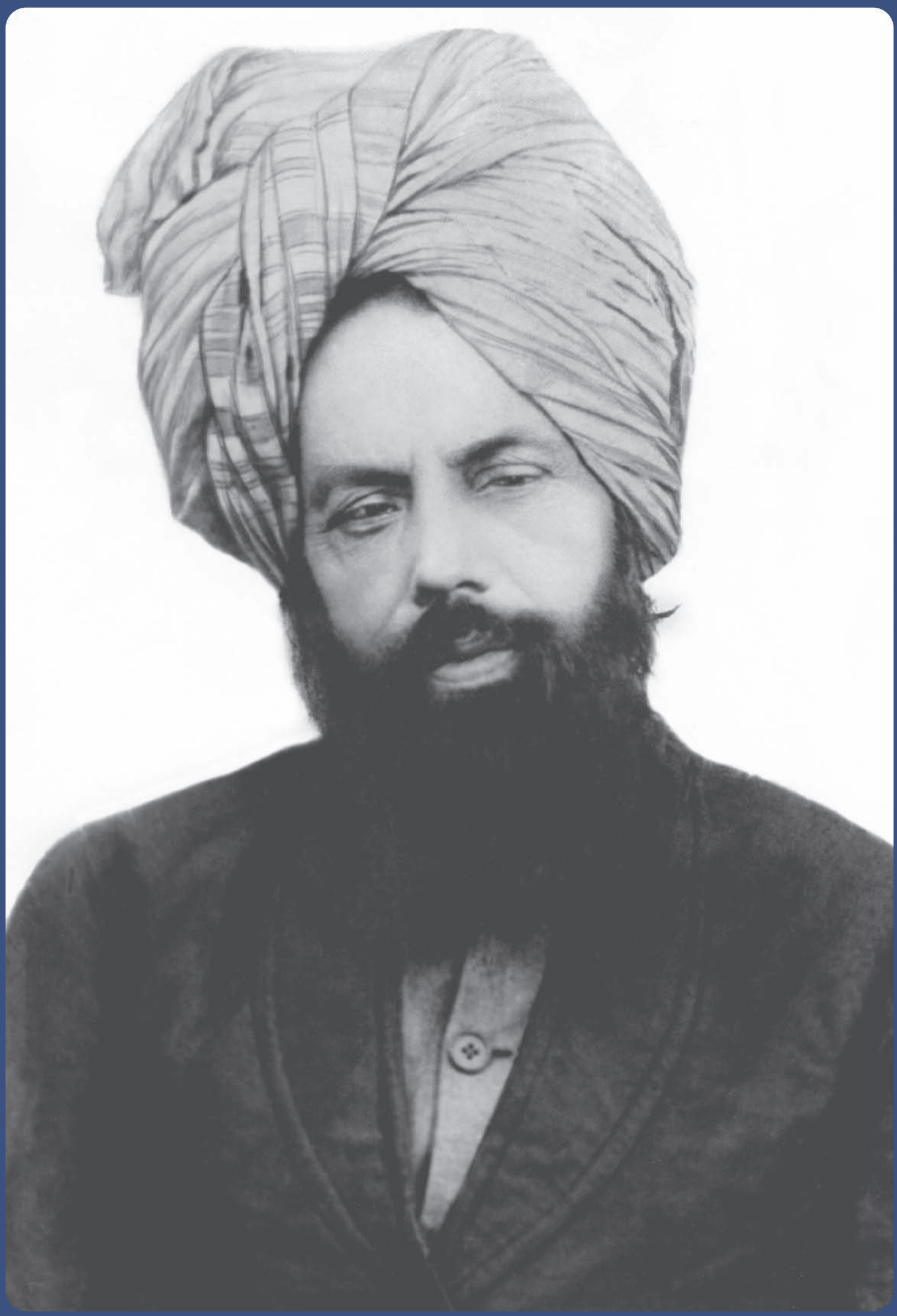

شبیہ مبارک حضرت مرزا غلام احمد صاحب قادیانی مسیح موعود و مہدی معہود علیہ السلام (1835ء- 1908ء)